डिजिटल मासिक पत्रिका, अंक: 64वाँ, अक्टूबर–2026, विक्रम संवत् 2083

विद्या भारती विद्यालय

सनातन धर्म

सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इण्टर कॉलेज

मिश्राना, लखीमपुर–खीरी ☎ 05872-796349 www.sdsvmbic.edu.in

सनातन स्वरा

अक्टूबर माह विशेषांक

नवरात्र
की मंगलमय शुभकामनाएं

विजय दशमी
की हार्दिक शुभकामनाएं

जागो पढ़ो बढ़ो

अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

शिक्षित बालिका समृद्ध भारत

सशक्त बालिका • सशक्त समाज • सशक्त भारत

संरक्षक

श्रीमती रश्मि बाजपेई
अध्यक्ष
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

डा. राकेश माथुर
उपाध्यक्ष
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

मार्गदर्शक

श्री चन्द्र भूषण साहनी
प्रबन्धक
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

श्री तुषार गर्ग
कोषाध्यक्ष
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

प्रधान सम्पादक

श्रीमती शिप्रा बाजपेई
प्रधानाचार्य
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

सह–सम्पादक

श्री राजेश दीक्षित
समाजसेवी

डॉ. सीमा मिश्रा
उपप्रधानाचार्य
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज,
लखीमपुर–खीरी

डॉ. विजय कुमार शुक्ल
प्रवक्ता
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज,
लखीमपुर–खीरी

तकनीकी मार्गदर्शक

श्री आशीष अवस्थी
सहा. आचार्य
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

श्री अरविन्द कुमार अग्निहोत्री
कार्यालय सहायक
स.ध.स.वि.म.बा.इ. कालेज, लखीमपुर–खीरी

शुभकामना संदेश

सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इंटर कॉलेज, मिश्राना द्वारा प्रकाशित डिजिटल मासिक पत्रिका "सनातन स्वरा" के 64वें अक्टूबर अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

विद्यार्थियों की रचनात्मकता को मंच प्रदान करने का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि यह अंक अक्टूबर माह के महत्वपूर्ण दिवसों - गाँधी जयंती, वायु सेना दिवस, नवरात्रि और अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस जैसे विषयों पर विद्यार्थियों के मौलिक विचारों से समृद्ध होगा।

विद्यालय की प्रधानाचार्या, पत्रिका के संपादक मंडल, सभी रचनाकार विद्यार्थियों एवं समाजसेवियों को बहुत-बहुत बधाई।

शुभाकांक्षी

25.09.2026

कमांडेंट प्रमोद देवरानी
सशत्र सीमा बल,
तृतीय वाहिनी,
लखीमपुर खीरी

शुभकामना संदेश

"सनातन स्वरा" केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि विद्यालय की शैक्षिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक चेतना का मुखर स्वर प्रतीत होती है।

अक्टूबर माह तो स्वयं ही प्रेरणा का माह है। इस माह बालिकाओं की लेखनी से निकले संस्मरण, कहानियाँ, कविताएँ और चित्र यह सिद्ध करते हैं कि सृजन की कोई सीमा नहीं होती।

जुलाई 2021 से इस सतत और सराहनीय प्रयास के लिए प्रधानाचार्या जी, संपादक मंडल और सभी नन्हें रचनाकारों को मेरी हार्दिक बधाई।

यह स्वर यूँ ही निरंतर गूँजता रहे।

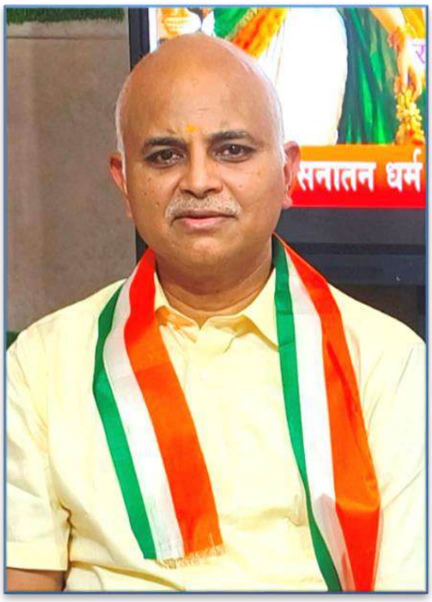

शुभ कामनाओं सहित

R.Tandon

डॉ. रूपक टण्डन
नेत्र सर्जन,
लखीमपुर खीरी

सम्पादकीय

प्रिय पाठकगण, सादर वन्दन ।

"संस्कारों से समृद्ध हो जीवन,
कर्तव्य से प्रकाशित हो पथ,
प्रकृति से जुड़ा रहे मन और
राष्ट्र के प्रति समर्पित रहे हृदय।"

अक्टूबर का आगमन अपने साथ ऋतु-परिवर्तन की सुखद आहट ही नहीं, बल्कि विचार, संवेदना, संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना के अनेक रंग लेकर आता है। शरद की उजली धूप, नवरात्रि की आराधना, विजयादशमी का विजय-संदेश और दीपावली की ओर बढ़ते कदम—पूरा वातावरण भारतीय संस्कृति की जीवंतता से आलोकित हो उठता है। ऐसे ही विविध भावों और प्रेरणाओं को अपने शब्दों में संजोते हुए 'सनातन स्वरा' का यह 64वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है ।

अक्टूबर माह हमारे लिए केवल तिथियों का क्रम नहीं, बल्कि प्रेरणाओं की एक पूरी पाठशाला है—

कहीं गाँधी जी का सत्य है, कहीं शास्त्री जी की सादगी;
कहीं नवरात्रि की शक्ति है, कहीं दशहरे की विजय;
कहीं बालिका के सपनों की उड़ान है, कहीं सैनिक का शौर्य;
कहीं प्रकृति के संरक्षण का संदेश है, तो कहीं राष्ट्र की एकता का संकल्प।

आइए, इस अक्टूबर हम केवल इन महत्वपूर्ण दिवसों को मनाएँ नहीं, बल्कि उनके संदेशों को अपने आचरण का हिस्सा बनाएँ।

हमारे विद्यालय की बालिकाएँ ज्ञान की ऊँचाइयों को छुएँ, संस्कारों की जड़ों से जुड़ी रहें, प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनें और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को समझें—यही 'सनातन स्वरा' की सार्थकता है।

"ज्ञान बने दृष्टि,
संस्कार बनें शक्ति,
सेवा बने साधना
और राष्ट्र बने सर्वोच्च प्राथमिकता।"

इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ 'सनातन स्वरा' के इस 64वें अंक को आप सभी के स्नेहिल हाथों में समर्पित करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता है।

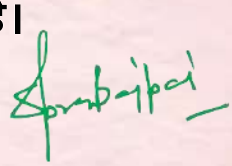

शिप्रा बाजपेई
प्रधानाचार्य

पत्रिका के संदर्भ में आपकी प्रतिक्रियाएँ ई–मेल आई.डी. sdbalika@rediffmail.com पर सदैव अपेक्षित हैं।

माह अक्टूबर – 2026 के महत्वपूर्ण दिवस

- 01 अक्टूबर– वृद्ध व्यक्तियों के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस
- 02 अक्टूबर– गाँधी जयंती और लाल बहादुर शास्त्री जयंती
- 03 अक्टूबर– विश्व प्रकृति दिवस
- 04 अक्टूबर– विश्व पशु कल्याण दिवस
- 06 अक्टूबर– विश्व वन्यजीव दिवस
- 08 अक्टूबर– वायु सेना दिवस
- 09 अक्टूबर– विश्व डाकघर दिवस
- 10 अक्टूबर– विश्व दृष्टि दिवस
- 11 अक्टूबर– शरद नवरात्रि प्रारम्भ, घटस्थापना
- 11 अक्टूबर– अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस
- 16 अक्टूबर– विश्व एलर्जी जागरुकता दिवस, विश्व खाद्य दिवस
- 20 अक्टूबर– विश्व सांख्यिकी दिवस
- 20 अक्टूबर– विजयादशमी (दशहरा)
- 22 अक्टूबर– स्वामी रामतीर्थ जयंती
- 24 अक्टूबर– संयुक्त राष्ट्र दिवस
- 26 अक्टूबर– महर्षि वाल्मीकि जयंती
- 29 अक्टूबर– करवा चौथ
- 30 अक्टूबर– डा. होमी जहांगीर भाभा जयंती
- 31 अक्टूबर– राष्ट्रीय एकता दिवस–सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती

सितम्बर 2026– अंक में विजयी छात्राएं

कविता/आलेख (जूनियर वर्ग)– प्रथम - आख्या पटेल 6B द्वितीय - राशी गुप्ता 8C तृतीय - तनवी वर्मा 7C	कविता/आलेख (सीनियर वर्ग)– प्रथम - आयुषी वर्मा 11A द्वितीय - ईशा गुप्ता 10B तृतीय - अंशिमा देवी 9B
चित्रांकन (जूनियर वर्ग)– प्रथम - निधि 6B द्वितीय - अननशिखा मिश्रा 6B तृतीय - अनुकृति वर्मा 7C	चित्रांकन (सीनियर वर्ग)– प्रथम - अक्षिता राठौर 10D द्वितीय - कशिश गुप्ता 11A तृतीय - अक्षिता सोनी 9B

Best wishes for your birthday!

On behalf of the school family, heartiest congratulations and best wishes to all the students of the school born in the month of October.

Ishani Srivastava-9A DOB – 1 October

Sanjna Devi-6C DOB – 1 October

Ishani Jaiswal-10C DOB – 2 October

Ishika Jaiswal-12A DOB – 2 October

Kashish Singh-6B DOB – 2 October

Kinjal Bajpai-6A DOB – 2 October

Swara Verma-10B DOB – 6 October

Tanishka Kashyap-6B DOB – 6 October

Mahek-6C DOB – 7 October

Priya Verma-10C DOB – 7 October

Vanshika Kashyap-10C DOB – 11 October

Deepti Verma-10C DOB – 12 October

Aliya-9B DOB – 13 October

Anshika Singh-11E DOB – 13 October

Ritika Rastogi-9B DOB – 13 October

Srashti Gupta-6B DOB – 14 October

Arya-11E DOB – 15 October

Agrima Mishra-12A DOB – 16 October

Khushi Tiwari-11C DOB – 17 October

Mahi Gupta-12D DOB – 18 October

Astha Pandey-11E DOB – 19 October

Shruti Shukla-9A DOB – 19 October

Tejasvi Patel-8C DOB – 19 October

Aashvi Pathak-6B DOB – 20 October

Riya Rajvanshi-10B DOB – 20 October

Anjali Rastogi-10C DOB – 21 October

Anshika Gupta-9A DOB – 21 October

Disha Rastogi-9A DOB – 21 October

Survi Kashyap-8C DOB – 21 October

Yashasvi Mishra-10A DOB – 21 October

Anupriya Verma-10B DOB – 22 October

Swati Verma-12D DOB – 24 October

Ridhima Singh-9B DOB – 25 October

Aarohi Verma-6C DOB – 26 October

Akanksha-12A DOB – 27 October

Avantika Verma-9B DOB – 27 October

Deepanjali Tiwari-12C DOB – 28 October

Prachi Soni-9A DOB – 29 October

Shreyadeep-11E DOB – 29 October

Arohi Srivastava-6C DOB – 30 October

Suhani Rastogi-6B DOB – 30 October

Ananya Pandey-9B DOB – 31 October

हमारी गतिविधियाँ

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

हर्षोल्लास एवं भक्तिमय वातावरण में मनाया गया श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

दिनाँक 03.09.2026 को कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा अनेक सुन्दर भजन, नृत्य व भगवान श्रीकृष्ण के जीवन की शिक्षाओं से प्रेरित भाषण प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में राधा–कृष्ण की मनमोहक सजीव झांकी तथा नृत्य एवं आचार्या सुश्री हर्षिता बरनवाल द्वारा प्रस्तुत भजन ''ओ कान्हा अब तो मुरली की...'' के कार्यक्रम ने सभी का मन मोह लिया।

शिक्षक दिवस

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जन्म जयन्ती 'शिक्षक दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम

इस अवसर पर छात्राओं ने अनेक सुन्दर कविताएँ, भाषण, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं गीत प्रस्तुत किए। विद्यालय रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में विद्यालय के पूर्व शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया, जिन्होने विद्यालय प्रगति में अपना अमूल्य योगदान दिया। इस अवसर पर विद्यालय प्रबन्ध समिति द्वारा सभी शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को भी भेंट देकर सम्मानित किया गया।

हिन्दी दिवस कार्यक्रम

एवं

विद्यालय के संस्थापक प्रबन्धक स्व. कन्हैयालाल की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि कार्यक्रम

दिनांक 14.09.2026 को विद्यालय में हिन्दी दिवस तथा हम सभी के प्रेरणास्रोत एवं विद्यालय के संस्थापक प्रबन्धक स्व. कन्हैया लाल जी की पुण्यतिथि पर वन्दना वेला में छात्राओं के मध्य विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन व पुष्पांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर विद्यालय में हिन्दी सप्ताह मनाया गया। 09 सितम्बर से हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ छात्राओं के मध्य आयोजित हुईं जैसे सुलेख प्रतियोगिता, श्रुतलेख प्रतियोगिता, निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, काव्यपाठ प्रतियोगिता एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

दिनाँक 14.09.2026 को रोटरी क्लब लखीमपुर सेन्ट्रल द्वारा कैम्प लगाकर छात्राओं को सर्वाइकल कैंसर की वैक्सीन लगाई गई।

सपनों का भारत : सेवाचित्र के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताएँ

मा. जिला विद्यालय निरीक्षक के आदेशानुसार ''सपनों का भारत–सेवाचित्र'' अभियान के अंतर्गत दिनाँक 19.09.2026 को विद्यालय में माननीय प्रधानमंत्री जी के 25 वर्षों के निरन्तर सेवाकाल की जनकल्याणी उपलब्धियों को जन–जन तक पहुँचाने एवं ''विकसित भारत 2047'' के अंतर्गत विद्यार्थियों को अपने सपनों के भारत की परिकल्पना को रचनात्मक रूप से अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से छात्राओं के मध्य निर्धारित थीम : मेरे सपनों का भारत : चित्र सेवा' के अर्न्तगत ड्रॉइंग, भाषण एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गईं।

'नमामि भारतम्': वन्दे मातरम् के 150वें वर्ष पर देशभर में गूंजा राष्ट्रस्वर

25 सितम्बर 2026 को प्रातः 11 बजे देश के 25000 से अधिक स्थानों पर एक करोड़ से अधिक विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक तथा समाज के विभिन्न वर्गों के नागरिक एक समय, एक स्वर और एक लय में सम्पूर्ण 'वन्दे मातरम्' का सामूहिक गायन किया। इस अवसर पर विद्यालय में स.ध.स.वि.मं.बा.इ.कॉलेज तथा स.ध.स.शि.मंदिर द्वारा संयुक्त रूप में प्रातः 10:15 बजे कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें 1187 छात्राओं, अभिभावकों, प्रबंध समिति, आचार्य एवं आचार्यायों ने सामूहिक वंदेमातरम गायन किया। कार्यक्रम में श्री प्रमोद देवरानी, कमांडेंट, सशत्र सीमा बल, तृतीय वाहिनी, लखीमपुर खीरी मुख्य अतिथि तथा डॉ0 रूपक टंडन, वरिष्ठ नेत्र सर्जन, लखीमपुर खीरी कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे। विद्यालय द्वारा वन्देमातरम् सामूहिक गायन कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय कुँ.खु.बा.इ.कॉलेज तथा महेन्द्र शिक्षण संस्थान में किया गया। जिसमें क्रमशः 206 तथा 122 छात्रा–छात्राओं एवं अध्यापकगणों ने प्रतिभाग किया।

वृद्ध व्यक्तियों के लिए अन्तरराष्ट्रीय दिवस

हमने निज मातृभूमि पर जन्म लिया। धीरे धीरे पढ़-लिखकर बड़े हुए। अपने जीविकोपार्जन में लगे। हमारे परिवार बढ़े। धीरे धीरे हम लोग अवस्था में बड़े होते गये। एक समय ऐसा भी आया जब हम दादा-दादी नाना-नानी बन गये। हमारी संख्या बढ़ती गयी और तब परिवार में कुछ समस्याएं उत्पन्न होने लगीं। वृद्धों की देखभाल की समस्या बढ़कर विकराल होती चली गयी। यहाँ तक कि वृद्ध जनों को वृद्धाआश्रम भेजा जाने लगा।

इस स्थिति को देखते हुए वर्ष 1982 में वृद्धजनों के अधिकारों और कल्याण की दिशा में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे बड़ी पहल हुई। "वर्ल्ड असेम्बली इन एजिंग" ने "वियना इंटरनेशनल प्लान आफ एक्शन आन एजिंग" को अपनाया। बाद में इसी वर्ष संयुक्त राष्ट्र महासभा ने भी इसे अपनी मंजूरी दे दी।

आधिकारिक घोषणा :- 14 दिसम्बर, 1990 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने संकल्प 45/106 पारित किया और इसी तारतम्य में प्रत्येक वर्ष 1 अक्तूबर को अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के रूप में मनाने की आधिकारिक घोषणा की गई। 1991 में वैश्विक स्तर पर सबसे पहली बार यह दिवस 1 अक्तूबर 1991 को मनाया गया था।

मनाने का उद्देश्य :-

1. योगदान की सराहना : समाज संस्कृति और विकास में वृद्धों द्वारा दिए गए अमूल्य योगदान और उनके अनुभवों का सम्मान करना।
2. चुनौतियोंके प्रति जागरूकता : बढ़ती उम्र के साथ आने वाली स्वास्थ्य समस्याओं, अकेलापन, उपेक्षा और उनके साथ होने वाले दुर्व्यवहार के खिलाफ समाज को जागरूक करना।

3. अधिकारों की सुरक्षा : वृद्धजनों के लिए स्वतंत्र जीवन, उचित देखभाल, सहभागिता व गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करने वाली नीतियों को बढ़ावा देना।

संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार चिकित्सा सुविधाओं में सुधार के कारण दुनिया भर में वृद्धों की आबादी तेजी से बढ़ रही है। जिसके चलते इस दिवस का महत्व और अधिक बढ़ गया है। साथ ही यह भी अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 2030 तक दुनिया भर में वृद्धों की संख्या युवाओं से अधिक हो जायेगी विकास शील देशों में यह वृद्धि सबसे अधिक दिखाई देगी।

अक्टूबर 2024 में सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग, शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत कार्य करने वाले विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग के साथ मिलकर विभिन्न प्रकार की गतिविधियां की गईं, जिससे कम आयु वर्ग के छात्रों में वृद्धजनों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता के मूल्यों को विकसित करने में मदद मिल सके। इससे विभिन्न पीढ़ियों के प्रति जुड़ाव एवं सम्मान की भावना जागृत होगी।

यदि समाज ने समय रहते इस तरफ़ ध्यान न दिया तो आने वाले समय में वृद्धजनों की देखभाल दूर उनके पास बैठने वाला कोई नहीं होगा। आज जो युवा है वह कल वृद्ध होगा, यदि इस तथ्य को ध्यान में रखा जाय तो समस्या का निदान सम्भव है। परन्तु आज प्रत्येक परिवार में भागमभाग लगी है। किसी को किसी से स्नेहप्रदर्शन तो दूर, बात करने का समय नहीं है।

समय है तो केवल जीवन, धन, प्राणाधार मोबाइल फोन के लिए! जैसे मानो इसके बिना जीवन कहाँ! यदि हम मोबाइल फोन से बच्चों को दूर रखें तो निश्चय ही ज्यादा अच्छा रहेगा।

यहां यह समझना आवश्यक है कि 60 वर्ष से अधिक आयु वरिष्ठ नागरिक, 80 वर्ष से अधिक आयु वाले को अति वरिष्ठ नागरिक एवं 90 वर्ष से अधिक आयु वाले को वृद्धजन की श्रेणी में माना जाता है।

आइए, अपने जीवन को सफल बनाने के लिए अपने वृद्धजनों का सम्मान करें यही सच्ची देशभक्ति, सच्ची ईशभक्ति, सच्ची पूजा है।

"करें जो वृद्धजनों की सेवा सदा सुख चैन पाते हैं।
निरन्तर यश वैभव सुख समृद्धि शांति और सुकून पाते हैं।
करें उपहास जो वृद्धों का सदा अपमान पाते हैं
वृद्धों की कर चरण सेवा श्री गौड़ जी सदैव सुख चैन पाते हैं।।"

सभी वृद्धजनों को शत् शत् नमन।

सन्तोष कुमार गौड़
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य
सदस्य-विद्वत परिषद
स.ध.स.वि.मं.बा.इ.कॉलेज
लखीमपुर-खीरी

इंजीनियर दिवस : सृजनशील बुद्धि से राष्ट्रनिर्माण तक

15 सितम्बर,- भारत में इंजीनियर दिवस, *"सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया जयंती"*

किसी राष्ट्र की प्रगति केवल उसकी ऊँची इमारतों, चौड़ी सड़कों और आधुनिक तकनीकों से नहीं मापी जाती; उसकी वास्तविक उन्नति इस बात में निहित होती है कि उसके युवा कितना सोचते हैं, कितना सृजन करते हैं और अपनी बुद्धि को मानवता के कल्याण में कितना समर्पित करते हैं।

15 सितम्बर का दिन इसी सृजनशील शक्ति को नमन करने का अवसर है। यह महान अभियंता, दूरदर्शी राष्ट्रनिर्माता और भारत रत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की जयंती है। उनके जीवन ने यह प्रमाणित किया कि ज्ञान जब अनुशासन, परिश्रम और राष्ट्रसेवा से जुड़ता है, तब वह केवल व्यक्तिगत सफलता का साधन नहीं रहता,- वह राष्ट्र की नियति बदलने की शक्ति बन जाता है।

बेटियाँ, भविष्य की सृजनकर्ता :- आज विज्ञान और तकनीक का संसार तीव्र गति से बदल रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता से लेकर अंतरिक्ष विज्ञान तक, जैव-प्रौद्योगिकी से लेकर नवीकरणीय ऊर्जा तक, हर क्षेत्र में नई संभावनाओं के द्वार खुल रहे हैं। इन द्वारों पर हमारी बेटियों की दस्तक भी उतनी ही आवश्यक है। किसी छात्रा को यह कहने की आवश्यकता नहीं कि "यह क्षेत्र लड़कियों के लिए कठिन है।" उसे केवल यह कहना चाहिए,- ***"यदि कोई समस्या है, तो उसका समाधान खोजने का साहस मेरे भीतर भी है।"***

इंजीनियरिंग का अर्थ केवल मशीनों और तकनीक को समझना नहीं है। इसका मूल अर्थ है,- समस्या को पहचानना, समाधान की कल्पना करना और उस कल्पना को वास्तविकता में बदल देना। यही क्षमता जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता का आधार बनती है।

ज्ञान से आगे,- 'दृष्टि' :- प्रिय छात्राओं, केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना आपकी अंतिम मंज़िल नहीं है। अपने भीतर जिज्ञासा जगाइए। प्रश्न पूछिए। प्रयोग कीजिए। असफल होने का साहस रखिए। किसी कठिन समस्या को देखकर पीछे हटने के बजाय स्वयं से पूछिए,-

"क्या मैं इसे किसी नए ढंग से हल कर सकती हूँ?"

यही प्रश्न एक विद्यार्थी को साधारण सीखने वाले से सृजनकर्ता बनाता है। आज की दुनिया में सबसे मूल्यवान शक्ति केवल जानकारी नहीं, बल्कि सोचने की क्षमता है। तकनीक हमारे हाथों में उपकरण दे सकती है, परंतु उसका सही उपयोग करने की दिशा हमारी बुद्धि, विवेक और मानवीय संवेदना निर्धारित करती है।

आपकी प्रतिभा,- राष्ट्र की पूँजी :- **भारत को ऐसे युवाओं की आवश्यकता है जो केवल नौकरी खोजने वाले न हों, बल्कि समाधान खोजने वाले हों; केवल तकनीक के उपभोक्ता न हों, बल्कि उसके सृजनकर्ता हों। हो सकता है कि आपकी बनाई कोई छोटी-सी परियोजना भविष्य में किसी बड़ी समस्या का समाधान बन जाए। आपके मन में आया कोई विचार किसी नए आविष्कार का आधार बन जाए। आपकी जिज्ञासा किसी शोध की दिशा बदल दे। इसलिए अपने सपनों को छोटा मत कीजिए। आपकी प्रयोगशाला छोटी हो सकती है, आपके संसाधन सीमित हो सकते हैं, पर आपकी कल्पना और संकल्प की कोई सीमा नहीं होनी चाहिए।**

विश्वेश्वरैया जी का जीवन हमें यही संदेश देता है कि उत्कृष्टता संयोग से नहीं मिलती। उसके पीछे वर्षों का अध्ययन, अनुशासन, श्रम और अपने उद्देश्य के प्रति अटूट निष्ठा होती है।

आज का संकल्प :- **इस इंजीनियर दिवस पर आइए, हमारी बेटियाँ केवल यह संकल्प न लें कि वे एक दिन इंजीनियर बनेंगी; बल्कि यह संकल्प लें कि वे जहाँ भी रहेंगी, कुछ बेहतर बनाने का प्रयास करेंगी।**

वे ज्ञान को शक्ति बनाएँगी, विज्ञान को समझेंगी,
तकनीक को मानवता से जोड़ेंगी, असफलताओं से सीखेंगी,
और अपनी प्रतिभा को राष्ट्र की प्रगति में समर्पित करेंगी।

क्योंकि,-

"एक बेटी जब ज्ञान से प्रकाशित होती है,
तो केवल उसका अपना भविष्य उज्ज्वल नहीं होता;
उसके प्रकाश से आने वाली पीढ़ियों की दिशा भी प्रकाशित होती है।"

आइए, अपनी बेटियों को केवल सपने देखने की शिक्षा न दें, उन्हें अपने सपनों को साकार करने का साहस, ज्ञान और अवसर भी दें।

इंजीनियर दिवस पर यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी;-

ऐसी पीढ़ी का निर्माण, जो केवल भविष्य की प्रतीक्षा न करे,
बल्कि अपने ज्ञान और सृजनशीलता से स्वयं भविष्य का निर्माण करे।

"सोचिए • सीखिए • सृजन कीजिए • नेतृत्व कीजिए" क्योंकि भारत का आने वाला कल आपकी प्रतिभा और आपके संकल्प से निर्मित होगा।

- के. एस. चीमा

संयुक्त राष्ट्र दिवस

"विश्व-व्यवस्था के पुनर्निर्माण का आह्वान"
"संयुक्त राष्ट्र की वर्तमान दुर्बलता, आवश्यक सुधार एवं भारत की भूमिका"
"वसुधैव कुटुम्बकम्"- सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है।

24 अक्टूबर को सम्पूर्ण विश्व में संयुक्त राष्ट्र दिवस मनाया जाता है। 1945 में स्थापित संयुक्त राष्ट्र संगठन का मूल उद्देश्य मानवता को युद्ध की विभीषिका से बचाना, राष्ट्रों के मध्य मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना तथा विश्व में शान्ति, सुरक्षा और सहयोग को सुदृढ़ करना था। किन्तु आज, बदलती हुई वैश्विक परिस्थितियों में, इस महान संस्था की प्रासंगिकता के साथ-साथ उसकी कार्यक्षमता और संरचना पर भी गम्भीर प्रश्न उठ रहे हैं।

वर्तमान विश्व में संयुक्त राष्ट्र की दुर्बलता :-

आज विश्व अनेक युद्धों, आतंकवाद, आर्थिक विषमता, जलवायु परिवर्तन, खाद्य एवं ऊर्जा संकट तथा तकनीकी असमानताओं से जूझ रहा है। गाज़ा, यूक्रेन, सूडान, ईरान और अन्य संघर्षग्रस्त क्षेत्रों की परिस्थितियाँ यह दर्शाती हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के समक्ष शान्ति स्थापना का कार्य कितना जटिल हो गया है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में पाँच स्थायी सदस्यों - अमेरिका, रूस, चीन, ब्रिटेन और फ्रांस - को वीटो अधिकार प्राप्त है। किसी प्रस्ताव पर इन शक्तियों के परस्पर विरोधी हितों के कारण निर्णय रुक सकता है। सितम्बर 2026 में ईरान से सम्बन्धित प्रतिबन्धों की स्वतंत्र निगरानी के विषय में रूस और चीन के वीटो ने भी परिषद् की सहमति-निर्भर कार्यप्रणाली की कठिनाइयों को उजागर किया।

वर्तमान सुरक्षा परिषद् की संरचना मुख्यतः 1945 के शक्ति-सन्तुलन को प्रतिबिम्बित करती है, जबकि आज एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका की भूमिका विश्व राजनीति में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। अतः प्रतिनिधित्व और निर्णय-प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता व्यापक रूप से अनुभव की जा रही है।

आवश्यक सुधार : समय की पुकार

संयुक्त राष्ट्र को अधिक प्रभावी, उत्तरदायी एवं प्रतिनिधिमूलक बनाने के लिए निम्नलिखित सुधार आवश्यक हैं;-

1. **सुरक्षा परिषद् का विस्तार :** स्थायी तथा अस्थायी दोनों प्रकार की सदस्यता में वृद्धि हो, जिससे एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका को उचित प्रतिनिधित्व मिले।
2. **वीटो अधिकार में सुधार :** वीटो के प्रयोग में अधिक पारदर्शिता और उत्तरदायित्व हो। व्यापक जनसंहार अथवा मानवीय संकटों में सामूहिक कार्रवाई बाधित न हो।
3. महासभा की भूमिका : संयुक्त राष्ट्र महासभा की आवाज़ और निर्णयों के प्रभाव को सुदृढ़ किया जाए।

4. विकासशील देशों की भागीदारी : वैश्विक वित्त, जलवायु नीति, स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा और तकनीकी विकास से सम्बन्धित निर्णयों में विकासशील राष्ट्रों की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित हो।
5. नवीन चुनौतियों पर सहयोग : साइबर सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक महामारी जैसे विषयों पर सामूहिक अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था विकसित की जाए।

भारत के प्रयास एवं विश्व का समर्थन :-

भारत संयुक्त राष्ट्र सुधार का निरन्तर समर्थक रहा है। भारत का मत है कि विश्व की वर्तमान जनसंख्या, आर्थिक शक्ति और भौगोलिक वास्तविकताओं को संयुक्त राष्ट्र की निर्णय-व्यवस्था में प्रतिबिम्बित किया जाना चाहिए। भारत ने शान्ति स्थापना अभियानों, मानवीय सहायता और विकास सहयोग के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र के कार्यों में योगदान दिया है।

भारत, ब्राज़ील, जर्मनी और जापान - जी-4 समूह - सुरक्षा परिषद् में स्थायी एवं अस्थायी दोनों श्रेणियों के विस्तार की वकालत करते हैं। इन देशों ने एक-दूसरे की स्थायी सदस्यता की दावेदारी का समर्थन किया है।

अनेक राष्ट्र तथा क्षेत्रीय समूह भी संयुक्त राष्ट्र सुधार की आवश्यकता पर बल देते हैं। अफ्रीकी देशों को अधिक प्रतिनिधित्व देने और विकासशील विश्व की आवाज़ सशक्त करने की माँग विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर उठती रही है। 2026 के भारत में आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भी वैश्विक शासन संस्थाओं में सुधार तथा विकासशील देशों के प्रतिनिधित्व को प्रमुखता मिली।

निष्कर्ष *:-* संयुक्त राष्ट्र दिवस केवल एक ऐतिहासिक संस्था की स्थापना का स्मरण नहीं, बल्कि विश्व-मानवता के प्रति हमारी सामूहिक जिम्मेदारी का दिवस है। वर्तमान युग में संयुक्त राष्ट्र को अधिक लोकतान्त्रिक, न्यायपूर्ण, पारदर्शी और प्रभावी बनाना समय की आवश्यकता है। भारत की प्राचीन संस्कृति का संदेश है ;- "सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।"

इसी भावना के अनुरूप एक ऐसे विश्व का निर्माण हो, जहाँ शक्ति से अधिक न्याय, संघर्ष से अधिक संवाद और स्वार्थ से अधिक मानवता का सम्मान हो।

"एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य।"

सम्पादकीय टिप्पणी :- "लेख में वर्तमान विश्व की परिस्थितियों और संयुक्त राष्ट्र सुधार पर भारत तथा अन्य देशों के दृष्टिकोण को तथ्यात्मक रूप में रखा गया है। सुधारों पर अन्तर्राष्ट्रीय सहमति अभी पूर्ण नहीं है; विभिन्न देश वीटो, स्थायी सदस्यता और परिषद् के विस्तार के स्वरूप पर अलग-अलग मत रखते हैं।"

के. एस. चीमा,
मुख्य प्रबन्धक (सेवानिवृत्त),
इण्डियन बैंक,
लखीमपुर-खीरी।

भारतीय दृष्टि में बालिका विकास

हमारी परम्परा में बालिका को शक्ति का स्वरूप माना गया है। मनु स्मृति कहती है– यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवताः ।

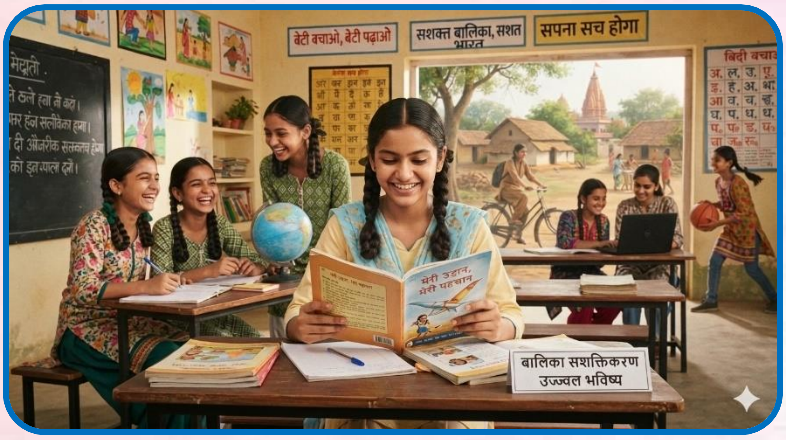

ऋग्वेद में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी ब्रह्मवादिनी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है जिससे स्पष्ट होता है कि कन्या को विद्या ग्रहण करने का भी अधिकार था और वह ज्ञान प्राप्त करके वह शास्त्रार्थ में भाग लेने की भी अधिकारिणी थी। उसका 'उपनयन' भी होता था। बृहदारण्यक उपनिषद में उल्लेख मिलता है कि महर्षि याज्ञवल्क्य से गार्गी और मैत्रेयी जैसी ऋषिकाओं ने गहन शास्त्रार्थ किया था। इसी प्रकार परम विद्वान मण्डन मिश्र और ब्रह्मज्ञानी शंकराचार्य के मध्य होने वाले शास्त्रार्थ की निर्णायिका देवी उभय भारती को बनाया गया था।

हम बालिका को लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा तीनों रूपों में मानकर पूज्य भाव रखते हैं। यही कारण है कि पश्चिम की अवधारणा में "नारी सशक्तिकरण" की बात की जाती है किन्तु हमारे यहाँ "शक्ति के जागरण" का भाव है।

वैदिक काल के बाद एक समय ऐसा आया जब विदेशी आक्रमणों के कारण सुरक्षा कारणों से बाल विवाह, पर्दा प्रथा और घर पर ही सीमित शिक्षा देने की प्रथाएँ विकसित हुई, जिससे बालिकाओं का स्वतंत्र विकास अवरूद्ध हुआ। यह भारत की मूल दृष्टि नहीं थी वरन् परिस्थितिजन्य विकृतियों का परिणाम था।

महर्षि वेद व्यास कृत महाभारत में कहा गया है–

"कन्याप्येवं पालनीया शिक्षणीयातियत्नतः"

अर्थात कन्या का पालन और शिक्षण बड़े ही यत्न से करना चाहिए। भारतीय दृष्टि में बालिका के विकास के पाँच आयाम होते हैं जिसे हम पंचकोषात्मक विकास भी कह सकते हैं –

1– शारीरिक विकास – अन्नमय कोष – शारीरिक विकास के क्रम में आयुर्वेद के अनुसार कन्या के प्रथम 'रजोदर्शन' को 'ऋतु उत्सव' कहा गया है। दक्षिक भारत में इसे एक संस्कार के रूप में मनाते हैं और सभी सम्बंधी मिलकर कन्या का पूजन करते हैं। इसे अपवित्रता नहीं, परिपक्वता माना गया है। बालिका को सन्तुलित आहार लेना चाहिए ताकि शरीर का उचित पोषण

हो। इसके साथ ही योग, व्यायाम और खेल आदि की सम्यक व्यवस्था और नियमित अभ्यास से उनका शारीरिक विकास होता है।

2– योग और दिनचर्या – प्राणमय कोष – शरीर में जीवन ऊर्जा का स्तर अर्थात् बालिका का प्राणमय कोष... उसका विकास करने के लिए दिनचर्या का ध्यान रखें, पर्याप्त नींद लेना, प्राणवान भोजन ग्रहण करना अर्थात् फल, हरी सब्जी और ताज़ा भोजन करना, बासी भोजन या जंक फूड नहीं लेना। घरेलू कार्यों में सहयोग या शारीरिक श्रम करना, रस्सी कूद अथवा शरीर की और श्वासों की गति को नियंत्रित करने वाले व्यायाम करना। प्रकृति के सानिध्य में समय बिताने का अवसर देना।

3– मानसिक और भावनात्मक विकास– मनोमय कोष – बालिका की सोच, भावनाएँ और उसका व्यक्तित्व उसके मनोमय कोष के विकास पर निर्भर हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योकि इसी से संस्कार बनते हैं। रामायण, महाभारत की कहानियाँ, हितोपदेश, पंचतंत्र की कहानियाँ, व्रत कथाएँ सुनने, भजन एवं लोकगीतों के गायन तथा माँ, दादी, नानी जैसी घर की बड़ी महिलाओं के अनुभव, ज्ञानतंत्र आधारित शिक्षाएँ इसमें बड़ी भूमिका निभाती हैं।

4– बौद्धिक विकास – विज्ञानमय कोष – बालिकाओं का बौद्धिक विकास अर्थात् उसका विवेक, ज्ञान और तर्क शक्ति। भारतीय दृष्टि में इसे 64 कलाओं के द्वारा विकसित किया जाता है। जिज्ञासा समाधान के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान भी देना श्रेयस्कर है। पुस्तक आधारित ज्ञान के साथ–साथ क्रिया आधारित चित्रकला, संगीत, पहेली, शतरंज, बागवानी सिलाई–कढ़ाई, कुकिंग आदि जीवनोपयोगी ज्ञान देने से बुद्धि का बहुमुखी विकास होता है। तर्कशक्ति बढ़ाने के लिए अभिव्यक्ति कौशल के प्रयोग, संवाद और गीत प्रतियोगिताएँ करवाना। संस्कृत, नीति शतकम् का पठन–पाठन तथा स्थानीय भाषा के लोकोक्ति, मुहावरे बोलना और समझना। निर्णय क्षमता बढ़ाने के लिए छोटे–छोटे कार्य सौंपे। इस प्रकार बौद्धिक विकास के लिए गतिविधि आधारित खेल भी कराए जा सकते हैं।

5– संस्कारगत विकास – आनंदमय कोष – बालिका के जीवन का मूल आधार है यह कोष... नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से विकसित बालिका मानवता के उच्च आदर्शों से युक्त होती है, जिससे वह जीवन के हर पहलू में संतुलन और शांति बनाए रखती है।

16 संस्कारों में कुछ संस्कार तो विशेष रूप से स्त्रियों के लिए ही हैं। जिनके द्वारा कन्या का भाव–पक्ष प्रबल बनता है। उनके अन्दर सत्य, सेवा, समर्पण, संवेदना, स्वाभिमान जैसे श्रेष्ठ गुण स्वाभाविक रूप से होते हैं, उन्हें जागृत करके हम एक नहीं दो परिवारों को सँवार सकते हैं, साथ ही भावी पीढ़ी की निर्मात्री के रूप में श्रेष्ठ समाज और उच्च आदर्शों से युक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। जहाँ स्त्री का विकास होता है वहाँ संस्कृति जीवित रहती है। हजारों साल तक विदेशी आक्रमण का दंश झेलने वाले भारत की सनातन संस्कृति की संरक्षक हमारी मातृशक्ति ही है जिसने अपने घरों में, नित्यप्रति की दिनचर्या में, परम्पराओं और लोक व्यवहार में उसे जीवित रखा अन्यथा इसे नष्ट करने के भरसक प्रयत्न किए गए।

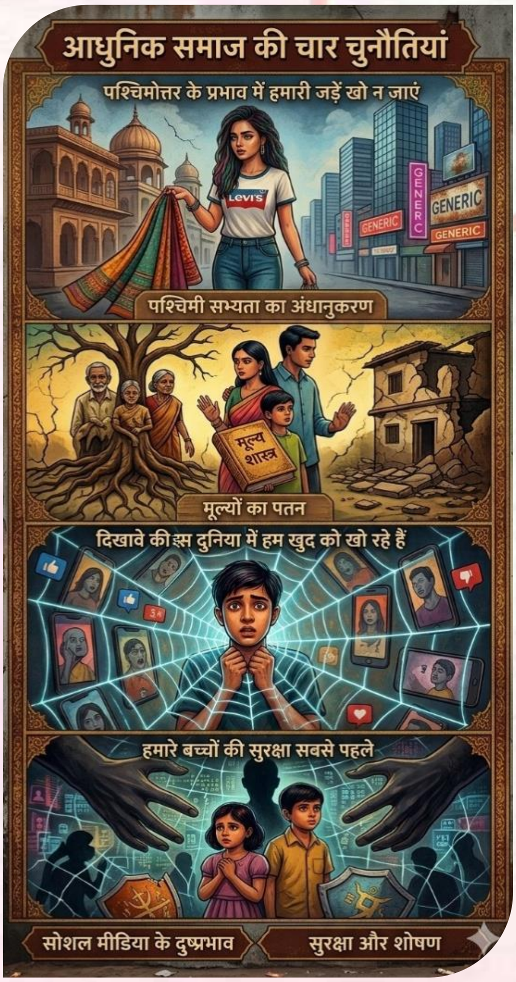

आज की चुनौतियाँ –

- पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण
- मूल्यों का पतन
- सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव
- सुरक्षा और शोषण

आज की आवश्यकता –

- शिक्षा + संस्कार + कौशल विकास (हुनर)
- आत्मनिर्भरता आत्मविश्वास बढ़ाती है।
- स्वास्थ्य और पोषण के प्रति जागरूकता
- स्वावलम्बन, राष्ट्र के आर्थिक विकास का सोपान है।
- लैंगिक समानता के लिए अनेक योजनाएँ हैं।

भारत सरकार की 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' और 'सुकन्या समृद्धि योजना', 'कन्या सुमंगला योजना', 'उड़ान छात्रवृत्ति कार्यक्रम' आदि अनेक योजनाएँ हैं जिनके द्वारा बालिकाओं को सशक्त बनाने का प्रयास किया जा रहा है। किन्तु हम सबको यह ध्यान रखना है कि बालिका का विकास एक सरकारी कार्यक्रम नहीं है बल्कि एक सांस्कृतिक यज्ञ है जिसमें परिवार, समाज और समुन्नत राज्य तीनों की आहुति हो, तभी समुन्नत राष्ट्र निर्माण का स्वप्न साकार हो सकता है।

"पंख पसारे बालिका, मिले उन्हें आकाश।
शिक्षा और संस्कार का, फैले नवल प्रकाश।।"

निधि द्विवेदी
पूर्णकालिका
क्षेत्रीय बालिका शिक्षा संयोजिका,
विद्याभारती,
पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र।

सत्य व धर्म की विजय का पर्व विजयदशमी

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता यहाँ के पर्वों, त्योहारों व उत्सवों की विशाल श्रृंखला है। जिसके अन्तर्गत विजय दशमी या दशहरा एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक पर्व है। जो हमें प्रत्येक वर्ष यह स्मरण दिलाता है कि अधर्म कितना ही शक्तिशाली दिखाई दे धर्म की ताकत उससे बड़ी होती है। असत्य हमेशा सत्य से पराजित होता है। यह पर्व सम्पूर्ण देश में अलग अलग परम्पराओं व रीति रिवाजों के साथ मनाया जाता है। विजय दशमी का प्रमुख सम्बन्ध मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम और लंकापति रावण से जुड़ा है।

अयोध्या के राजा दशरथ ने श्री राम को युवराज घोषित किया। उत्सव की तैयारियाँ चल रही थीं कि कैकेयी ने उन्हें पूर्व वचनों की याद दिलाते हुए भरत के लिए राज्य और राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास मांग लिया। पिता के वचनों को सर्वोपरि मान कर श्रीराम सीता और लक्ष्मण के साथ वन को चल दिए। सबसे पहले वे तमसा नदी के क्षेत्र में पहुँचे। वहाँ से आगे बढ़ते हुए श्रृंगवेरपुर गये जहाँ निषाद राज गुह ने उनका स्वागत सत्कार किया। गंगा नदी पार कर श्रीराम भरद्वाज मुनि के आश्रम पहुँचे। मुनि ने उन्हें चित्रकूट में निवास करने की सलाह दी। श्रीराम, सीता व लक्ष्मण ने चित्रकूट में कुटिया बनाकर कुछ समय तक निवास किया। इसी दौरान भरत उन्हें वापस अयोध्या ले जाने के लिए आये किन्तु श्रीराम ने लौटने से इंकार कर दिया। भरत श्रीराम की चरण पादुकाएं लेकर अयोध्या लौट गये।

कुछ समय बाद श्रीराम चित्रकूट से आगे बढ़े और दंडकारण्य वन क्षेत्र में पहुंचे। यहाँ इन्होंने अनेक ऋषि-मुनियों से भेंट की और उन्हें राक्षसों के अत्याचारों से मुक्ति दिलाई। आगे चलकर श्रीराम, सीता व लक्ष्मण पंचवटी पहुंचे और वहाँ सुन्दर कुटिया बना कर वहीं रहने लगे। पंचवटी में रावण की बहन शूर्पणखा उन्हें मिली। उसने श्रीराम के सामने विवाह का प्रस्ताव रखा। अस्वीकार करने पर उसने सीता के प्रति आक्रामक व्यवहार किया। जिससे कुपित होकर लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट दिए। शूर्पणखा ने खर-दूषण को इसकी जानकारी दी। जिन्होंने राक्षसों के साथ श्रीराम पर आक्रमण किया किन्तु परास्त होकर मारे गए। तब शूर्पणखा ने लंका जाकर भाई रावण को पंचवटी की घटनाओं और सीता के सौन्दर्य के बारे में बताते हुए बदला लेने के लिए प्रेरित किया।

लंकापति रावण ने मारीचि की सहायता ली और साधु रूप धारण कर छल से सीता का हरण कर लिया। रावण जब सीता को विमान से लंका ले जा रहा था तो सीता की पुकार सुनकर पक्षीराज जटायु ने रोकने का प्रयास किया।

रावण ने उसके दोनों पर काट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। श्रीराम सीता को खोजते हुए जटायु तक पहुँचे, उसने उन्हें सीताहरण व रावण के बारे में जानकारी दी और प्राणत्याग दिए। श्री राम ने जटायु का अन्तिम संस्कार किया।

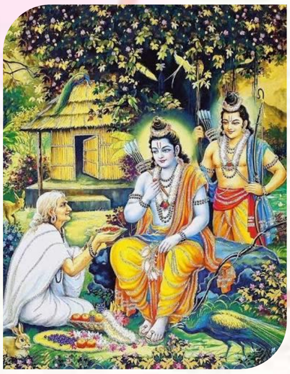

सीता की खोज में श्रीराम व लक्ष्मण आगे बढ़े रास्ते में उन्हें कबन्ध नामक राक्षस मिला। जिसका राम ने उद्धार किया। कबन्ध ने उन्हें ऋष्यमूक पर्वत पर रहने वाले सुग्रीव से मिलने की सलाह दी। आगे बढ़ते हुए दोनों भाई मतंग ऋषि के आश्रम में पहुँचे जहाँ भक्त शबरी ने उनका प्रेम व भक्ति से स्वागत किया। शबरी ने श्रीराम को पंपा सरोवर और ऋष्यमूक पर्वत की दिशा बताई जहाँ पर सुग्रीव अपने साथियों के साथ रहते थे। ऋष्यमूक पर्वत के समीप श्रीराम व लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव को आशंका हुई कि ये बाली के भेजे गए कोई योद्धा तो नहीं हैं। उन्होंने हनुमान को उनका परिचय जानने के लिए भेजा। हनुमान ब्राह्मण का रूप धारण कर श्रीराम, लक्ष्मण के पास गये और बातचीत के दौरान पता चला कि दोनों भाई सीता की खोज में हैं। हनुमान ने उन्हें अपना परिचय दिया और उन्हें सादर सुग्रीव के पास ले गये। सुग्रीव से मित्रता के बाद श्री राम ने बाली को मार कर सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बना दिया और अंगद को युवराज।

राजा बनने के बाद सुग्रीव ने सीता की खोज में चारों दिशाओं में वानर सेना भेजी। काफी खोज के बाद संपाती नामक गिद्ध से पता चला कि रावण सीता को समुद्र पार ले गया है। अब प्रश्न था लंका कौन पार करेगा? जामवंत ने हनुमान को उनके बल का स्मरण कराया। हनुमान ने श्रीराम की मुद्रिका अपने पास रखी और पर्वताकार रूप धारण कर समुद्र पार करने के लिए छलांग लगा दी। अनेक बाधाओं को पार करने के बाद अशोक वाटिका में सीता से उनकी भेंट हुई। अशोक वाटिका उजाड़ने और लंका दहन के बाद सीता माता से वे फिर मिले सीता ने हनुमान को अपनी चूड़ामणि तथा श्रीराम के लिए सन्देश दिया। जिसे लेकर हनुमान वापस आ गए तथा श्री राम से सारा वृतान्त कहा। श्रीराम ने सीता को रावण से मुक्त कराने का संकल्प लिया। श्रीराम, लक्ष्मण, सुग्रीव, अंगद, हनुमान, जामवंत विशाल वानर सेना लेकर समुद्र तट पहुँच गये। नल-नील की सहायता से समुद्र पर सेतु का निर्माण कराया। जिससे लंका तक आसानी से पहुँचा जा सके।

लंका में लंका दहन के बाद भय का वातावरण बन गया। लंकापति रावण को उसकी महारानी मंदोदरी, भाई विभीषण सहित कई मंत्रियों ने सीता को राम को सौंप देने के लिए समझाया। नीति-अनीति, धर्म-अधर्म की दुहाई दी किन्तु अहंकार में डूबे रावण ने एक न सुनी। भाई विभीषण के बार-बार समझाने पर कुपित होकर उसे लात मार कर निकाल दिया। अपमानित विभीषण श्री राम की शरण में आ गये। श्री राम की सेना ने लंका को चारों ओर

से घेर लिया। युद्ध टल जाए इसलिए अंगद को दूत बना कर रावण के पास भेजा गया। अंगद ने रावण को समझाया कि वह सीता को लौटा दे और युद्ध से बच जाये। रावण ने अंगद को अपमानित करने का प्रयास किया। अब युद्ध निश्चित हो गया।

श्रीराम व रावण सेना के मध्य भयंकर युद्ध शुरू हो गया। वानरों व राक्षसों के बीच भीषण युद्ध में रणभूमि लाशों से पट गई। मेघनाथ से युद्ध के दौरान लक्ष्मण मूर्च्छित हो गए। सुषेण वैद्य की बताई संजीवनी बूटी को हनुमान जी हिमालय के द्रोणागिरि पर्वत सहित उठा लाये। स्वस्थ्य होने के बाद लक्ष्मण ने मेघनाथ से पुनः युद्ध कर उसे परास्त कर खत्म कर दिया। युद्ध में कुम्भकर्ण भी मारा गया। युद्ध हजारो राक्षस वीरो सहित पुत्र मेघनाथ व भाई कुम्भकर्ण के मारे जाने के बाद रावण स्वयं युद्ध भूमि में उतरा वह अत्यंत शक्तिशाली व मायावी था। राम रावण के मध्य भयंकर युद्ध हुआ। रावण के अनेक सिर व भुजाएं थीं। श्रीराम उसके सिर काटते किन्तु वे पुनः प्रकट हो जाते। तब विभीषण ने बताया कि रावण की नाभि में अमृत है। राम ने दिव्य अस्त्र चला कर रावण की नाभि का अमृत सुखा दिया फिर उसके दसों सिरों को काट दिया। रावण भूमि पर गिर पड़ा उसके साथ उसका अहंकार, अत्याचार और अधर्म का अन्त हो गया।

श्री राम ने दशमी तिथि को रावण पर विजय प्राप्त की थी इसलिए इसे विजय दशमी कहा जाता है। लंकापति रावण के दस सिर थे श्री राम ने युद्ध में उसके दसों सिर काट दिए थे इसलिए इसे 'दशहरा' भी कहते हैं। इस दिन रावण के दर्प का हरण हो गया था अतः इसे 'दर्पहर्ता' कहना भी उचित लगता है। सीता की खोज से लेकर रावण वध तक की कथा केवल युद्ध विजय की कथा नही है यह सत्य, साहस, धर्म, मित्रता, भक्ति, त्याग और मर्यादा की विजय का संदेश देती है।

प्राचीन काल से अब तक विजय दशमी के दिन बुराई के प्रतीक रावण के पुतले का दहन किया जाता है लेकिन हमें यह भी सोचना चाहिए क्या हमारे भीतर का अहंकार, क्रोध, स्वार्थ भी समाप्त हो रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि हम दशहरा को एक धार्मिक उत्सव के रूप में न मनाकर इसे आत्म चिंतन और आत्म सुधार का पर्व बनाएं। केवल रावण का ही पुतला न जलाएं बल्कि अपने भीतर के अहंकार, क्रोध, लोभ, द्वेष का भी अंत करने का संकल्प लें। यही इस पावन पर्व की सच्ची सार्थकता है।

उमेश चंद्र श्रीवास्तव
से.नि. प्रधानाचार्य
पब्लिक इंटर कॉलेज,
ईसा नगर, लखीमपुर खीरी

स्वामी रामतीर्थ : वेदांत के विश्वदूत

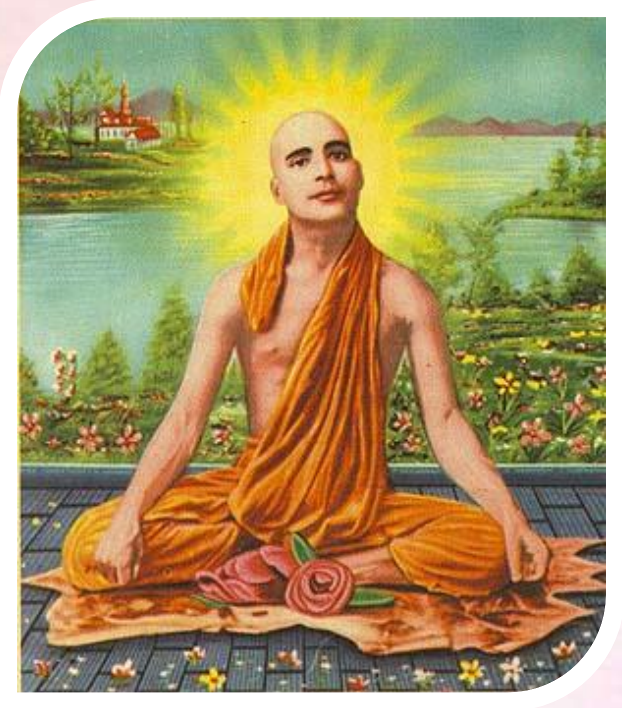

हम लोग स्वामी विवेकानंद के बारे में अधिक जानते हैं, लेकिन उनके योग्य और प्रिय शिष्य स्वामी रामतीर्थ को कम जानते हैं या बिल्कुल नहीं जानते हैं। इस कारण स्वामी रामतीर्थ पर यह ज्ञानवर्धक आलेख काफी उपयोगी होगा।

स्वामी रामतीर्थ भारत के महान वेदांत प्रचारक, कवि, गणितज्ञ और राष्ट्रवादी संत थे। स्वामी विवेकानंद के बाद वे सबसे प्रभावशाली सन्यासी थे, जिन्होंने भारतीय वेदांत के अलौकिक आलोक को विश्वमानस तक प्रभावी ढंग से पहुंचाया। उन्हें *हँसता हुआ सन्यासी* (The Laughing Swami) और *'भारतीय अध्यात्म का राजकुमार'* कहा जाता है। उनका जन्म 22 अक्टूबर 1873 को मुरारीवाला गाँव, जिला गुजराँवाला (अब पाकिस्तान) पंजाब में हुआ था। उनका बचपन का नाम तीर्थराम गोस्वामी था। उनका परिवार आर्थिक रूप से गरीब था, माता निहालदेई थीं और उनके पिता पंडित हीरानंद पुरोहित थे। बालक तीर्थराम कुशाग्र बुद्धि के थे, पर स्वभाव में वैराग्य, एकांतप्रियता और अंतर्मुखी चेतना थी। उनकी गणित भाषा में विशेष अभिरुचि थी और उन्होंने वर्ष 1895 में मिशन कालेज, लाहौर से गणित में परास्नातक किया और बाद में वहीं गणित के प्रोफेसर नियुक्त हुए। गणित के अध्यापन में उन्हें उसकी अपूर्णता की अनुभूति हुई कि जीवन के प्रश्न बहुत जटिल, विशाल और गहन हैं, जिन्हें मात्र गणित के निश्चित सूत्रों से हल नहीं किया जा सकता। उन्होंने इस बिंदु पर बौद्धिक, गणितीय और भौतिक ज्ञान की सीमा और अक्षमता की अनुभूति हुई। उन्होंने कहा, 'The external mathematics can't solve the internal problems of life.'

आध्यात्मिक परिवर्तन :-

उनकी चेतना पर भगवान श्री कृष्ण, गीता वेदांत और स्वामी विवेकानंद के जीवन और दर्शन का गहरा प्रभाव था। उन्होंने वर्ष 1901 में अपनी स्पष्ट और गहरी आध्यात्मिक पुकार सुनकर और आचार्य माधवतीर्थ (द्वारिकापीठ) से दीक्षित होकर अपनी प्रोफेसर की सेवा, अपनी प्रिय पत्नी और अपने बच्चों को त्याग कर सन्यास ग्रहण कर लिया और तीर्थराम गोस्वामी से स्वामी रामतीर्थ हो गए।

विश्वयात्रा पर स्वामी रामतीर्थ :-

इसके बाद स्वामी जी जापान और अमेरिका की कठिन यात्रा पर वेदांत का महान ध्वज लेकर निकल पड़े। पहले जापान (Yokohama, Osaka, Kyoto, Tokio) में स्वामी जी ने लोगों का विभिन्न मंचों पर आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया और व्यवहारिक वेदांत की शिक्षा दी और उसके बाद वर्ष 1902 से 1904 तक अमेरिका के प्रमुख शहरों विशेषकर San Francisco, California में वेदांत के ऊपर सारगर्भित और ओजस्वी व्याख्यान दिए। स्वामी विवेकानंद ने पश्चिम में जिस महान सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार और विस्तार की गहरी नींव बनाई थी, स्वामी रामतीर्थ ने उसको और अधिक प्रभावी, शक्तिशाली और दीर्घजीवी बना दिया। अमेरिका के निवासियों ने उन्हें 'Living Christ of India' कहा। स्वामी रामतीर्थ ने कहा, "मैं नए धर्म का प्रवर्तक नहीं हूँ। मैं तुम्हारी शाश्वत आत्मा के जागरण का विज्ञान वेदान्त लाया हूं।" स्वामी रामतीर्थ की सम्पूर्ण शैली स्वामी विवेकानंद की थी। उन्होंने वेदांत की अपूर्व आत्मा की महानता के रहस्य को जान लिया था। वे चाहते थे कि विश्व मनुष्य की अज्ञान, बंधन और दुःख से आच्छादित चेतना वेदांत की ज्योतिर्मय आत्मा का संस्पर्श करे और मुक्त हो जाए। उनकी दृष्टि में वेदांत शास्त्रों का अध्ययन मात्र नहीं है, बल्कि जीवन को बदलने वाला क्रांतिकारी विज्ञान है। वे कहते थे, "I am Ram. The whole world is my body. (मैं राम हूं और सारा संसार मेरा शरीर है।) उनका वैश्विक संदेश जहाँ वेदांत के गूढ़ सत्यों का प्रचार-प्रसार था, वहीं भारत के लिए कर्मयोग का था। वे अपने देश की दासता और विपन्नता से अत्यधिक दुःखी थे, इसके लिए उन्होंने लोगों को आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली और क्रियाशील होने का संदेश दिया। उन्होंने हिंदी, उर्दू और फारसी में प्रकृति और भगवान पर सुन्दर कविताएं भी लिखीं। उनका सम्पूर्ण साहित्य 'In Woods of God-Realisation' (रामतीर्थ ग्रंथावली) के रूप में प्रकाशित किया गया है। उनका केंद्रीय संदेश 'अहम ब्रह्मस्मि' का है। जिसका अर्थ है कि जीव ब्रह्म है।

उनका जीवन दर्शन 'आनंद का दर्शन' (The Philosophy of Delight) है जिसका अर्थ है 'मुस्कुराते रहो' (Keep Smiling)। उनका कहना था, 'To laugh is virtue, To weep is sin'.

1904 में वे विश्वयात्रा पूरी कर भारत लौटे। 17 October, 1906 दीपावली के दिन मात्र 33 वर्ष की आयु में उन्होंने पवित्र गंगा में स्नान करते हुए जल समाधि ले ली।

डॉ० रघुनन्दन झा,
समाजसेवी एवं अभिप्रेरक,
लखीमपुर–खीरी

कविता : गांधी की लाठी

सत्य अहिंसा परम् धरम जिनका ये प्यारा नारा था।
नारे से बढ़कर जिनको भारत का गौरव प्यारा था ।।
जिसने सपना नयन बीच एक आजादी का पाला था।
जिसने लाठी के बलपर गोरों को देश निकाला था।।
उस बापू की चौराहे पर खड़ी मूर्ती रूठी थी।
दृष्टि पड़ी जब हाँथों पर गांधी की लाठी टूटी थी।।
इसी नगर कल सुबह धर्म की वेदी पर आघात हुआ।
गाय काट दी नीचों ने छाती पर बज्राघात हुआ।।
हत्यारों को उस माता पर थोड़ी दया नहीं आई ।
तड़पी व्याकुल होकर बोली रोई चीखी चिल्लाई।।
मुझे बचा लो भारत वासी मैं भी तेरी माता हूँ।
कृषकों का आधार, बैल–बछड़ों की जननी जाता हूँ।।
मैंने अपना दूध पिलाकर तुमको इतना बड़ा किया।
शक्ति मिली मेरे पयोधि से निज पैरो पर खड़ा किया।।
आज कसाई ले कटार टुकड़ों में मुझको बाँट रहे।
तेरी ही आँखों के आगे तेरी माँ को काट रहे।।
रहा नही क्या अब उबाल तेरे शरीर के पानी में।
आग लग गई है क्या तेरी चढ़ती हुई जवानी में।।
कायर लोगों का है इस वसुधा पे कोई नाम नही।
क्या होगा उस यौवन का जो आए माँ के काम नही।।
कुछ माँ के बच्चे ही अपने निजी स्वार्थ में अड़े रहे।
कटती रही गाय आँखों के आगे फिर भी खड़े रहे।।
बापू की मूरत भी कुछ ना आत्मव्यथा को बोल सकी।
पत्थर की थी इसीलिए न अधरों के पट खोल सकी।।
माना की प्रत्यक्ष रूप से मूरत कुछ ना कह पाई ।
लेकिन अपनी आत्म व्यथा बिन बोले भी ना रह पाई।।
जिन बच्चों को सत्य अहिंसा वाला पाठ पढ़ाया था।
गौ माता, भारत माता सबसे बढ़कर बतलाया था।।
आज उन्हीं के आगे मेरे सपनों का संहार हुआ।
तड़प–तड़प मर गई गाय माता पर अत्याचार हुआ।।
सत्य अहिंसा परम् धरम वाली परिपाटी छूट गई।
मैं कहता हूँ इसीलिए गांधी की लाठी टूट गई।।

– अतुल मिश्र 'मधुकर'

शरद पूर्णिमा वाल्मीकि जयंती पर छंद

बालमीक वाली लीक पे कभी चले ही नहीं,
सांचे में हृदय के कोई रूप भी गढ़ा नहीं।
भवभूति की करुण कल्पना में डूबे नहीं,
भक्ति प्रीति से कभी भी मन को मढ़ा नहीं।
कृतिवास, एकनाथ,केशव अछूते रहे,
मानस का सिर पे बुखार भी चढ़ा नहीं।
राम के स्वरूप पे लिखूँ क्या भला छंद कोई,
कवितावली का कोई छंद तो पढ़ा नहीं।।

अतुल मिश्र 'मधुकर'
ग्राम व पोस्ट–बाईकुआँ,
मैगलगंज, खीरी।

नवरात्रि के अवसर पर छंद

(1)

दुर्गुणों का नाश करे माँ भवानी, जगदम्ब,
काली, मंगला, जयंती कितने ही नाम हैं।
तेरी भक्ति से सभी के क्लेश सारे मिट जाते,
और बन जाते सभी बिगड़े जो काम हैं।
तेरी ही कृपा से दुष्ट दानव दलन होता,
पूर्ण काम हो गए हमारे प्रभु राम हैं।
तू विभूति कारिणी वियोग शोक हारिणी है,
आदिशक्ति माँ भवानी तुझको प्रणाम है।।

(2)

जिंदगी की राह में भटकती ही जा रही हूँ ,
आपको पुकारती हूँ राह दिखलाइए।
धन द्रव्य संपदा का मुझको है लोभ नहीं ,
एक अभिलाषा आप दरश दिखाइए।
लिखती हूँ जो भी देशहित लिखती रहूँ मैं ,
मेरे हर छंद शब्द शब्द में समाइए ।।
दुष्ट दुराचारियों का अंत करने के लिए,
सिंह पे सवार होके मातु चली आइए।।

सुश्री अंजलि वर्मा
ओज कवयित्री
बाईकुआं, मैगलगंज,
लखीमपुर खीरी

राष्ट्रीय एकता दिवस

मुक्तक

अनेकता में एकता हो, मेल चाहिए।
आतंकियों की नाक में, नकेल चाहिए।
खंड-खंड भारत, अखंड हो मेरा,
भारत को फिर सपूत, वो पटेल चाहिए।।

गीत

प्यार के सौदाई हम हैं, प्यार के सौदाई।
हिंदू मुस्लिम सिख इसाई, सब हैं भाई-भाई।।

(1)

एक हमारी मातृभूमि है, एक वेश हो भाषा।
मिलकर के सब रहे यहाँ, ये है मेरी अभिलाषा।।
मुश्किल पर्वत सी भी फिर तो, हो जाएगी राई।।
प्यार के सौदाई हम हैं .....।

(2)

एक ही तन है एक वतन है, एक ध्येय है मेरा।
ना कुछ तेरा ना कुछ मेरा, सब कुछ मेरा।।
एक ही ईश्वर की संताने, फिर क्यों मची लड़ाई।।
प्यार के सौदाई हम हैं ....।

(3)

कुछ तो सोचो अपने मन में, किसे सताते हो तुम।
नाना विधि के छल प्रपंच कर किसे मिटाते हो तुम।।
अपने हाथों से नफरत की, खोद रहे क्यों खाई।।
प्यार के सौदाई हम हैं.......।

(4)

कोई नहीं पराया अपना है सारा संसार।
प्रेम पथिक बनकर बन जाओ वीर गले का हार।।
प्रेम सत्य है सत्य प्रेम है, सीख यही सिखलाई।।
प्यार के सौदाई हम हैं.......।

(5)

हम सब सुमन एक उपवन के एक हमारा माली।
हम सब से ही सजी हुई है, उपवन की हर डाली।।
स्वच्छ चाँदनी है "मयंक" की इस उपवन पर छाई।।
प्यार के सौदाई हम हैं, प्यार के सौदाई।।

मयंक मोहन दीक्षित
सुप्रसिद्ध कवि व शिक्षक,
सिकटिहा, लखीमपुर खीरी

संघ शताब्दी वर्ष में किया जाने वाला युवा संवाद।

युवा वह है जिसमें असीम शक्ति अनन्त ऊर्जा ओज और जोश समाहित है। आवश्यकता उसे समुचित दिशा देने की उसकी गति पर नियंत्रण रखने की है।

एक अच्छी बाइक या स्कूटी वह है जिसका ब्रेक एवं एक्सलेटर दोनों नियंत्रण में हो। एक्सलेटर यदि गति देता है तो ब्रेक गाड़ी की गति को नियंत्रित कर दुर्घटना से बचाता है। युवा को यदि हनुमान जैसी असीम शक्ति अनन्त वेग अतुलित सामर्थ्य चाहिये तो वृद्ध जामवंत की सलाह नियंत्रण और दिशाबोध भी।यह दोनों एक दूसरे के पूरक एवं अभिन्न और अविभाज्य रूप से संबंधित है। युवा वह है जिसमें विषमताओं का सामना करने प्रतिकूलताओं से टकराने जीवन के संघर्षों से ना घबराने की जिजीविषा एवं संकल्पशक्ति हो। हमें ध्यान रखना है जो हवा का झोंका एक जलते हुए दीपक को क्षण मात्र में बुझा देता है वही हवा जंगल में लगी आग को और भी फैला देती है। महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि हम दीपक की आग हैं या जंगल में लगी आग यदि हम दीपक की आग होंगे तो जीवन की विषमताओं प्रतिकूलताओं के प्रवाह में एक झटके में बुझ जायेगे यदि हम जंगल में लगी आग है तो हम उन्हीं परिस्थितियों में और भी फैल जायेगे। दो स्थितियां होती हैं परिस्थिति और मनःस्थिति। यदि हमारी मनःस्थिति कमजोर होती है तो हम पर जीवन की परिस्थितियां हावी हो जाती है।तब मानव तर्क देता है कि मानव परिस्थितियों का दास है परिस्थितियों ने उससे वह करवा लिया जो वह करना नहीं चाहता था आदि आदि। मगर जब हमारी मनःस्थिति सशक्त एवं सुदृढ़ होती है तो व्यक्ति जीवन की सारी विषमताओं के चक्रव्यूह को तोड़ झंझावातों को चीर फाड़ पतितपावनी माता गंगा की तरह अपने निश्चित लक्ष्य तक पहुंचता है।

पतितपावनी माता गंगा हिमालय पर्वत के गौमुख से निकलती है तो कितने बड़े बड़े अवरोध विषमताओं की चट्टानें उनके मार्ग में आती है तो क्या गंगा विषमताओं से घबड़ा वापिस गौमुख लौट जाती है। मैदान की गंगा का प्रवाह शान्त सौम्य होता है जबकि पहाड़ की गंगा का प्रबल प्रवाह प्रलयंकर हाहाहुती होता है। उनके मार्ग में आने वाली चट्टानों का वजन किलो में नहीं, कुन्तलों में नहीं टनों में होता है। वे टनों की चट्टानें दुर्गमता के वे उत्तंग शैलशिखर गंगा माता के सतत आगे बढ़ने की जिजीविषा अमोघ संकल्पों की लहरों से टकराते टकराते उनकी क्या परिणति होती है वे टनों की चट्टानें प्रतिकूलताओं के दुर्गम शैलशिखर माता गंगा के अपराजेय आत्मविश्वास सुदृढ़ संकल्पशक्ति सतत आगे बढ़ने की जिजीविषा से टकराते टकराते हरिद्वार या ऋषिकेश में गंगा के किनारे के उन अत्याधिक सूक्ष्मतम बालू कणो में होती है कि हमारी एक मुट्ठी में दस बीस हजार बालू कण आ जायेगे। यह महत्व है जीवन की प्रतिकूलताओं से टकराने का संघर्षों से ना विचलित होने का निरन्तर आगे बढ़ने के लिये प्रयत्नशील होने का अपनी आस्थाओं को अडिग अपने संकल्पों पर कायम रहने का।

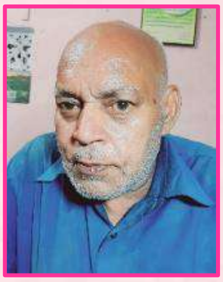

राजेश दीक्षित
सामाजिक कार्यकर्ता

विश्व पशु कल्याण दिवस

"जिस हृदय में जीवों के प्रति दया है, वही सच्चे अर्थों में मानवता से भरा हुआ है।"

विश्व पशु कल्याण दिवस प्रत्येक वर्ष 4 अक्टूबर को मनाया जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य लोगों को पशुओं के प्रति प्रेम, दया, करुणा और जिम्मेदारी की भावना के लिए जागरूक करना है। पशु हमारे जीवन और प्रकृति का अभिन्न हिस्सा हैं। वे पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मानव जीवन को अनेक प्रकार से उपयोगी बनाते हैं। हमारे आसपास अनेक प्रकार के पशु-पक्षी पाए जाते हैं। गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली, पक्षी और अनेक वन्यजीव प्रकृति की सुंदरता और विविधता को बढ़ाते हैं। पशु भी मनुष्यों की तरह सुख, दुख, भूख और पीड़ा का अनुभव करते हैं। इसलिए उनके साथ प्रेम और संवेदनशीलता से व्यवहार करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। आज के समय में पशुओं के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। बढ़ता शहरीकरण, जंगलों की कटाई, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आवासों का नष्ट होना अनेक जीवों के जीवन को प्रभावित कर रहा है। कुछ पशु अवैध शिकार और क्रूरता के भी शिकार होते हैं। ऐसे में पशु कल्याण के प्रति जागरूक होना और उनके संरक्षण के लिए प्रयास करना बहुत आवश्यक है।

पशुओं की देखभाल केवल उन्हें भोजन देने तक सीमित नहीं है। गर्मी के दिनों में उनके लिए स्वच्छ पानी रखना, घायल पशु को सहायता पहुँचाना, पक्षियों के लिए दाना-पानी रखना और पालतू पशुओं की उचित देखभाल करना भी पशु कल्याण का हिस्सा है। वन्यजीवों को उनके प्राकृतिक आवास में सुरक्षित रखना भी हमारी जिम्मेदारी है। विद्यालयों में इस दिवस के माध्यम से बच्चों को पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशील बनाया जा सकता है। निबंध लेखन, भाषण, पोस्टर, चित्रकला और जागरूकता रैली जैसी गतिविधियों के द्वारा विद्यार्थियों को पशु संरक्षण का महत्व समझाया जा सकता है। बच्चों को यह सिखाना आवश्यक है कि प्रत्येक जीव प्रकृति की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

"पशु बोल नहीं सकते, लेकिन उनकी आँखें उनकी भावनाएँ व्यक्त करती हैं; इसलिए उनकी पीड़ा को समझना हमारी जिम्मेदारी है।"

विश्व पशु कल्याण दिवस हमें यह संदेश देता है कि पृथ्वी केवल मनुष्यों के लिए नहीं है। इस धरती पर रहने वाले प्रत्येक जीव को सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन का अधिकार है। यदि हम पशुओं के प्रति दयालु होंगे, तो हमारा समाज भी अधिक संवेदनशील और मानवीय बनेगा।

आइए, विश्व पशु कल्याण दिवस पर हम संकल्प लें—

"प्राणियों के प्रति दया, प्रकृति के प्रति सम्मान और सभी जीवों के प्रति करुणा।"

निधि शुक्ला
सहा0 आचार्या

होमी जहांगीर भाभा :
जीवन परिचय एवं वैज्ञानिक जीवन

होमी जहांगीर भाभा भारत के महान वैज्ञानिक, भौतिक विज्ञानी और भारतीय परमाणु विज्ञान के प्रमुख आधार-स्तंभों में से एक थे। उन्होंने अपने वैज्ञानिक चिंतन, शोध और दूरदर्शिता से भारत में आधुनिक परमाणु विज्ञान के विकास की मजबूत नींव रखी। उनका जीवन विद्यार्थियों, शिक्षकों और युवा वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

जीवन परिचय :- **होमी जहांगीर भाभा का जन्म 30 अक्टूबर 1909 को मुंबई में एक प्रतिष्ठित पारसी परिवार में हुआ था। बचपन से ही उन्हें गणित और विज्ञान में विशेष रुचि थी। उन्होंने मुंबई में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय का रुख किया।**

कैम्ब्रिज में उन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की, लेकिन उनकी गहरी रुचि सैद्धांतिक भौतिकी में थी। आगे चलकर उन्होंने भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण शोध किया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई।

वैज्ञानिक जीवन :- **होमी भाभा ने मुख्य रूप से परमाणु भौतिकी और कॉस्मिक किरणों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। उनके शोध ने उच्च-ऊर्जा कणों और उनके व्यवहार को समझने में विज्ञान जगत को महत्वपूर्ण योगदान दिया।**

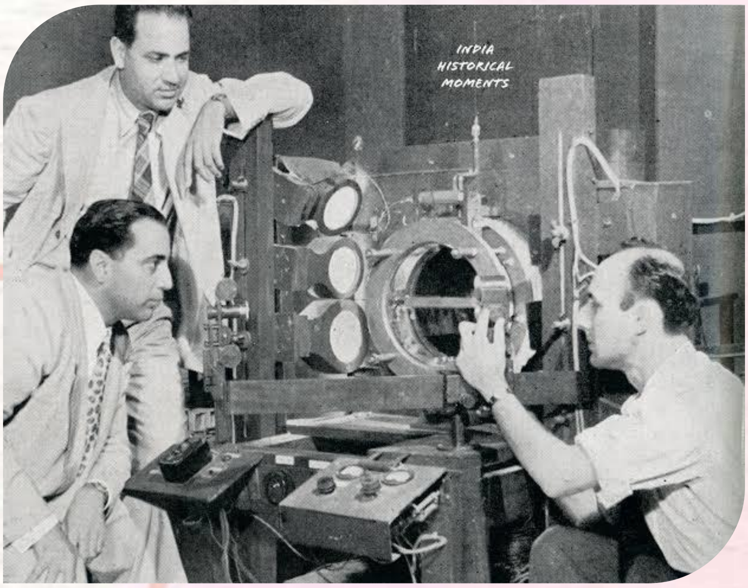

उन्होंने भाभा प्रकीर्णन (Bhabha scattering) से संबंधित महत्वपूर्ण वैज्ञानिक कार्य किया। कॉस्मिक किरणों और इलेक्ट्रॉन-पॉज़िट्रॉन के अध्ययन में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

भारत लौटने के बाद उन्होंने देश में उच्च स्तर के वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए संस्थान विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया। वर्ष 1945 में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (TIFR) की स्थापना में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। यह संस्थान आगे चलकर भारत में मौलिक वैज्ञानिक अनुसंधान का एक प्रमुख केंद्र बना।

भारत के परमाणु कार्यक्रम में योगदान :- भारतीय परमाणु कार्यक्रम के निर्माता : 1944 में उन्होंने टाटा को पत्र लिखकर परमाणु अनुसंधान की नींव रखने को कहा। इसी से 1945 में TIFR - टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च बना, और 1954 में Atomic Energy Establishment, Trombay बना, जो आज BARC है।

विज्ञान को आत्मनिर्भर बनाया : उनका मंत्र था - "विज्ञान से ही भारत शक्तिशाली बनेगा"। उन्होंने कहा था कि परमाणु ऊर्जा शांतिपूर्ण कामों जैसे बिजली, खेती और मेडिसिन के लिए भारत को खुद विकसित करनी होगी।

मौलिक वैज्ञानिक खोजें :-

1. भाभा स्कैटरिंग (Bhabha Scattering) - इलेक्ट्रॉन और पॉज़िट्रॉन के टकराव का उनका सिद्धांत आज भी पार्टिकल फिजिक्स की किताबों में पढ़ाया जाता है।

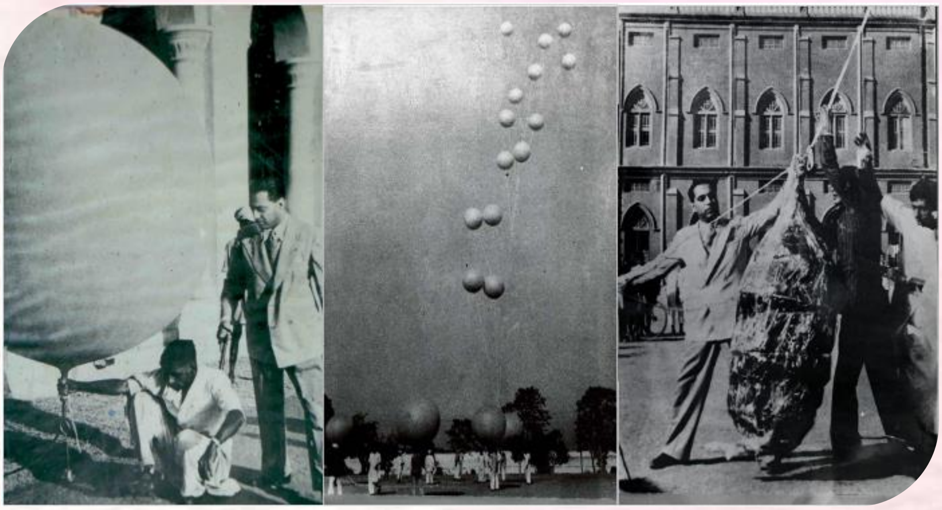

Cluster of 50-60 rubber weather balloons carrying a cosmic ray instrument (1948)

2. कॉस्मिक किरणों पर उनका काम।

विज्ञान संस्थाओं के निर्माता : उन्होंने ISRO के जनक विक्रम साराभाई के साथ मिलकर भारत के स्पेस प्रोग्राम का रोडमैप भी बनाया।

इसलिए हर साल 30 अक्टूबर को उनके जन्मदिन को याद किया जाता है - क्योंकि उन्होंने भारत को सिर्फ विज्ञान नहीं, बल्कि वैज्ञानिक सोच से आत्मनिर्भर बनने का रास्ता दिखाया।

निवेदिता अवस्थी
प्रवक्ता

मुक्तक

नवरात्रि

ये सारा विश्व जो तूने धरा पर माँ रचाया है।
किया जो गौर पाया हर तरफ तेरी ही छाया है।।
बड़ा कोई कोई छोटा कोई हँसता कोई रोता,
यहाँ हर व्यक्ति हर इक शै महामाई की माया है।।

विजयदशमी (दशहरा)

सारी बुराइयों का इस तरह हल निकालें।
अन्तस में व्याप्त अपने रावण को मार डालें।।
सच बोलें, झूठ छोड़ें, संकल्पसिद्धि पा लें,
इस तरह आओ हम सब यह दशहरा मना लें।।

करवा चौथ

बातों में छोटी-छोटी मेरा दिल न तोड़ना!
जाऊं कहीं भटक मैं तो रुख मेरा मोड़ना!!
अनजाने में हो जाए अगर मुझसे कुछ खता,
साथी निभाना साथ मेरा संग न छोड़ना।।

कहती हूँ मेरे नाथ! हर जनम में चाहिए।
हाथों में तेरा हाथ हर जनम में चाहिए।।
सारे ज़माने भर की चाहिए न मिल्कियत,
साथी तुम्हारा साथ हर जनम में चाहिए।।

डॉ० विजय शुक्ल बादल
प्रवक्ता

विनम्र श्रद्धांजलि

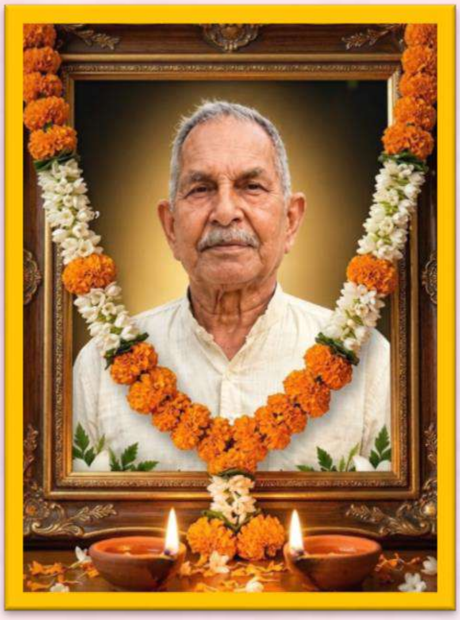

अत्यन्त दुःख का विषय है कि स.ध. सरस्वती शिशु मंदिर, मिश्राना के पूर्व प्रधानाचार्य श्री मुनेन्द्र दत्त शुक्ल जी के पूज्य पिता जी **पं. कृष्ण दत्त शुक्ला जी** का दि. 21.09.2026, दिन सोमवार को निधन हो गया। विद्यालय में शोक सभा आयोजित कर प्रभु से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें और इस असीम दुःख को सहन करने की परिवार को शक्ति प्रदान करें। इस दुःखद घड़ी में समस्त विद्यालय परिवार उनके साथ है।

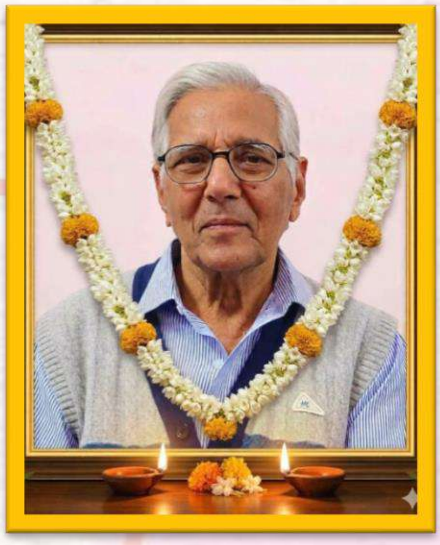

डॉ. नित्य मेहरोत्रा, दन्त चिकित्सक के पूज्य पिताजी नगर के गौरव, प्रख्यात चिकित्सक एवं समाजसेवी डॉ० कमल बिहारी लाल मेहरोत्रा जी के दिनाँक 30-09-2026, बुधवार को आकस्मिक निधन से पूरा विद्यालय परिवार स्तब्ध और दुःखी है। ईश्वर पुण्यात्मा को शांति प्रदान करें। ॐ शांति"!

बालिकाओं का कोना

❋ विजय दशमी ❋

विजयी दशमी आई।
सबके मन को भाई।।
रावण का पुतला जलाया।
नाना ने मेला दिखाया।।
रामलीला का आनन्द आता।
दशहरा का मेला बहुत भाता।।
मम्मी ने दशहरे की पूजा करी।
विजयीदशमी है आई खुशियों से भरी।।

अभिज्ञा शुक्ला
कक्षा–8C

❋ भारत की बेटी ❋

"मैं भारत की बेटी हूँ,
देश की एक शक्ति हूँ।
शिक्षा मेरी पहचान बने,
मेहनत मेरी शान बने।
तिरंगे की ऊँची शान रखूं,
देश के लिए अरमान रखूं।
बेटी हूँ, कमजोर नहीं,
भारत की पहचान सही।
मैं रुकूँ नहीं, मैं झुकू नहीं, यही मेरा प्रण है,
भारत की बेटी हूँ मैं, यही मेरी पहचान है।

इशानी श्रीवास्तव
कक्षा–9A

❋ अन्तरराष्ट्रीय बालिका दिवस ❋

एक गाँव में रिया नाम की एक लड़की रहती थी। वह पढ़ाई में बहुत होशियार थी। उसका सपना था कि वह डॉक्टर बने। लेकिन गाँव के कुछ लोग कहते थे कि लड़कियों को पढ़ाने–लिखाने की जरूरत नहीं होती है। रिया के माता–पिता भी कभी–कभी गाँव वालों की बातो में आ जाते थे। एक दिन रिया ने अपने माता–पिता से कहा कि अगर मुझे पढ़ने का मौका मिलेगा तो मैं अपनी सपने को पूरा करूंगी और एक दिन मैं आप लोगों का नाम रोशन करूँगी और गाँव की सभी लडकियों को शिक्षा के लिए जागरूक करूँगी। उसकी बात सुनकर उनके माता–पिता को एहसास हुआ कि बेटी के सपनों को पूर्ण होने से रोकना सही नहीं हैं। हम अपनी बेटी को लक्ष्य तक पहुँचाने में उसकी मदद करेंगे। उन्होंने रिया को आगे पढ़ाने का फैसला किया। फिर रिया ने खूब मेहनत से पढ़ाई की और परीक्षा में पूरे शहर में प्रथम आई। उनके माता पिता का नाम रोशन हुआ। उन्होंने पूरे गाँव में मिठाई बँटवाई। फिर गाँव के दूसरे माता–पिता भी अपनी बेटी को स्कूल भेजने लगे। कुछ वर्ष बाद रिया डॉक्टर बनकर गाँव वापस आयी और गरीब लोगों की इलाज मुफ्त में करने लगी। उसी दिन से लोगों ने प्रण लिया कि हमें अपनी बच्चियों को शिक्षा प्राप्त करने से रोकना नहीं चाहिए। अब हम अपनी बेटियों को अच्छी शिक्षा और अच्छे संस्कार देंगे ताकि हमारी बेटी भी भविष्य में हमारा नाम रोशन करे।

❋ विश्व प्रकृति दिवस ❋

एक गाँव में रोहन नाम का लड़का रहता था। उसे पेड़–पौधों और पशु, पक्षियों से बहुत प्रेम था। उसके घर के पास एक बड़ा पेड़ था। जिसकर कुछ पक्षियों का घोसला था। एक दिन कुछ लोग उस पेड़ को काटने आए। रोहन ने उन्हें रोक कर कहा, “यह पेड़ मेरे घर के पास है और मुझे हवा, छाया और फल देता है, इसे मत काटिए। लेकिन किसी ने भी उसकी बात नहीं मानी। कुछ महीनों बाद गाँव में बहुत गर्मी पड़ी। गाँव से सारे पक्षी भी जा चुके थे। गाँव में पानी की भी कमी हो गयी। तब गाँव वालों को अपनी गलती का एहसास हुआ। सब ने मिलकर फैसला लिया कि अब हम अपने गाँव में खूब पेड़–पौधे लगाएँगें। रोहन ने भी अपने दोस्तों के साथ मिलकर पौधे लगाए और उनकी देखभाल की; रोज उनमें पानी डालना, खाद डालना आदि किया। फिर गाँव के प्रधान ने कहा के आज हमें समझ आया कि पेड़–पौधे हमारे लिये कितनें जरूरी हैं। प्रकृति की रक्षा करना हम सभी का कर्तव्य है। रोहन ने मुस्कुराकर कहा कि अगर हम प्रकृति की रक्षा करेंगे तो प्रकृति भी हमें बचाएगी। हमें पेड़–पौधों, जीव जन्तुओं की रक्षा करनी चाहिए। प्रकृति सुरक्षित रहेगी, तभी हम और हमारा भविष्य भी सुरक्षित रहेगा।

अंशिमा देवी
कक्षा–9B

❋ आँखें ❋

दो आँखें हैं, तो दुनिया रंगीन है।
हर सपना जैसे कोई तस्वीर हसीन है।।
सूरज की किरण हो या चाँदनी रात।
आँखें ही तो दिखाती हैं, दुनिया के हर जज्बात।।
ओस की बूँदों पर, सूरज की सोने सी किरणे दिखतीं।
और न होती आँखें तो, उंगलियाँ यह पंक्तियाँ कैसे लिखती?
आँखे दुनिया की खिड़कियाँ हैं, इनके पार बसा संसार है।
समय ठहरता नही किसी के लिए, तभी ये आँखे देखने को तैयार हैं।।
जब तक इन आँखों में है उजाला, तब तक देखूँगी इक ख्वाब निराला।।
देख लूँ एक सुंदर ख्वाब, जब तक ये आँखें हैं साथ।
इस भीड़–भरे बाज़ार में, इन आँखों ने दी मुझे, दुनिया की सुंदर सौगात।।

आर्ची तिवारी
कक्षा–12D

❋ बालिका दिवस–*बालिकाएँ क्या नहीं कर सकतीं* ❋

बालिका दिवस है आया।
बालिकाओं ने अपने मन का गीत है गाया।।
उनको भी मान दो।
उनको भी सम्मान दो।।
बालिकाओं का रक्षण।
माता–पिता का होता परीक्षण।।
बालिकाएँ क्या नहीं कर सकतीं।
मुसीबत में वे नहीं ठहरती।।
अपना लक्ष्य तो बना लिया।
हर रास्ते पर चलना स्वीकार किया।।
कुछ पीछे भी यदि रह गईं।
आगे निकलने के लिए, सभी मुसीबतें सह गईं।।
मनोयोग से मेहनत करते जाओ।
सही राह पर चलकर खूब निखरते जाओ।।

शालू वर्मा
कक्षा–8C

✵ पहेलियाँ ✵

1– वह कौन महापुरुष थे, जिनके नाम का संधि–विच्छेद करने पर महा + आत्मा होता है।

उ0– महात्मा गांधी।

2– लाल हैं पर टमाटर नहीं! बहादुर हैं, पर सैनिक नहीं! शास्त्री हैं, पर पंडित नहीं! बताओ कौन?

उ0– लाल बहादुर शास्त्री ।

3– महात्मा है पर आत्मा नहीं, गाँधी है पर राजीव गाँधी नहीं। बताओ कौन?

उ0– महात्मा गाँधी।

4– वे कौन से ऋषि महान थे जिन्होंने रामायण लिखी?

उ0– महा + ऋषि अर्थात् महर्षि वाल्मीकि

5– आचार्य हैं पर विद्यालय के आचार्य नहीं, नरेन्द्र है पर नरेन्द्र मोदी नहीं, देव हैं पर सूर्य देव नहीं। तो वह है कौन?

उ0– आचार्य नरेन्द्र देव

शालू वर्मा
कक्षा–8C

✵ Mahatma Gandhi ✵

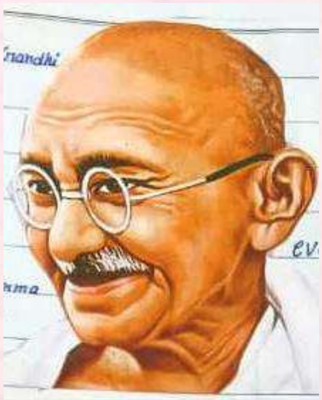

We celebrate the birthday of our father of nation Mahatma Gandhi as Gandhi Jayanti a national festival. It is celebrated on 2nd of October every year. Mahatma Gandhi was the chief leader of the national freedom movement of our country.

Mahatma Gandhi was born on 2nd October, 1869 at Porbandar in Gujrat. His full name was Mohandas Karamchand Gandhi. His father's name was *Karamchand Gandhi* and *Putli Bai* was his mother. In his childhood, he always spoke the truth. Gandhiji passed his matriculation in 1888. He was sent to England to study law. After returning from there he started his practice of Law. He went to South Africa in 1893 to plead a Case. He was moved to see the bad condition of Indians living in South Africa. He led Indians there for struggle against injustice. The great weapon adopted by Gandhijl for this struggle was "Satyagraha”. Gandhiji returned from South Africa in 1915.

There was British rule in India that time and he saw how they treated the Indians. He started struggle of freedom for his countrymen. Gandhiji did this till the achievement of freedom on 15th August, 1947. Therefore, Gandhiji was called the father of nation in India.

Shalu Verma
Class-8C

❋ शरद नवरात्रि प्रारम्भ ❋

प्रस्तावना :– शारदीय नवरात्रि हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह त्योहार आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से शुरू होता है, और नौ (9) दिनों तक चलता है। इन नौ दिनों में माँ दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। नवरात्रि के नौ दिनों में माँ शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, कुष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और माँ सिद्धिदात्री देवी की जाती है। दसवें दिन विजयादश्मी का पर्व मनाया जाता है।

एक प्राचीन कथा :– बहुत समय पहले महिषासुर नाम का एक राक्षस था, वह बहुत शक्तिशाली था और लोगों को परेशान करता था। तब माँ दुर्गा ने उससे युद्ध किया और उसका वध कर दिया। माँ दुर्गा की इस विजय को देखकर देवी– देवता अत्यंत प्रसन्न हुए और तब से इसी की याद में नवरात्रि का पर्व मनाया जाता है।

उपसंहार :– शारदीय नवरात्रि हमें अच्छाई और सच्चाई कि के मार्ग पर चलने की सीख देती है। हमें यह पर्व श्रद्धा और खुशी के साथ मनाना चाहिए।

यशस्वी मिश्रा
कक्षा–10A

❋ Reflection ❋

13 October : The Problem Arrived.
13 October ; The Day I was born.
According to MY FAMILY :- It was a very Happy day.
According to me :- They had no Idea what was coming?
Every year peaple say :- "Happy Birthday"
I Say :- "Thank You."
They say :- "God bless you"
I Say :- "Cash will also work"

Birthday is basically a yearly reminder that I'm getting older while my common sense is still under construction.

Anyways, another year, but still fighting out that “what I’m doing?

A Birthday is a celebration of life, memories & new hopes.

Yashasvi Mishra
Class-10A

चित्रांकन—यशी प्रजापति—7C

चित्रांकन—शालू वर्मा—8C

चित्रांकन—शालू वर्मा—8C

चित्रांकन—शीलू वर्मा—8C

चित्रांकन—आर्या पटेल—6B

चित्रांकन—अस्तुति—7C

चित्रांकन—कृति कश्यप—7C

चित्रांकन—आकांक्षी सिंह—11A

चित्रांकन—अक्षिता शर्मा—7C

चित्रांकन—अभिज्ञा शुक्ला—8C

Current Affairs

सितंबर 2026 की महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का बिंदुवार (Point-wise) विवरण:

शीर्ष 10 राष्ट्रीय घटनाक्रम (भारत) 🇮🇳 *(National Current Affairs)*

घटनाओं का तिथि, स्थान, तथ्य और विस्तृत प्रभाव के साथ वर्णनात्मक ब्योरा :-

1) **05 सितंबर 2026 | नई दिल्ली | राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2026 और 'PM-SHRI' 2.0 का विस्तार**

* तथ्य : 5 सितंबर को शिक्षक दिवस पर विज्ञान भवन, नई दिल्ली में राष्ट्रपति द्वारा देश के 50 उत्कृष्ट शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्रदान किए गए। इसी अवसर पर शिक्षा मंत्रालय ने 'PM-SHRI 2.0' योजना का विस्तार किया।

* प्रभाव : सरकारी स्कूलों में एआई-आधारित स्मार्ट कक्षाओं और डिजिटल लैब के लिए वित्तीय आवंटन बढ़ाया गया, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच सुलभ होगी।

2) **08 सितंबर 2026 | अहमदाबाद, गुजरात | मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट : पहला 100-मीटर स्टील ब्रिज स्थापित**

* तथ्य : 8 सितंबर को नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (NHSRCL) ने मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल कॉरिडोर हेतु महाराष्ट्र-गुजरात सीमा के पास 1,405 टन वजनी और 100 मीटर लंबा पहला विशाल स्टील ब्रिज सफलतापूर्वक स्थापित किया।

* प्रभाव : यह उपलब्धि भारत के पहले बुलेट ट्रेन प्रोजेक्ट के निर्माण में एक बड़ा मील का पत्थर है, जिससे देश के बुनियादी ढांचे (Infrastructure) के निर्माण की गति में भारी सुधार प्रदर्शित होता है।

3) **14 सितंबर 2026 | नई दिल्ली | हिंदी दिवस एवं 'भारतीय भाषा नेटवर्क' का शुभारंभ**

* तथ्य : 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' के अवसर पर गृह एवं सहकारिता मंत्रालय द्वारा विज्ञान भवन में राष्ट्रीय भाषा सम्मेलन आयोजित किया

गया। इस दौरान 'भाषिणी' टूल आधारित 'भारतीय भाषा नेटवर्क' पोर्टल लॉन्च हुआ।
* प्रभाव : केंद्र और राज्य सरकारों की प्रशासनिक सेवाओं, कानूनी दस्तावेजों और सरकारी पोर्टलों का सभी 22 आधिकारिक भारतीय भाषाओं में वास्तविक समय (Real-time) अनुवाद संभव हो सका।

4) **17 सितंबर 2026 | साबरमती, गुजरात | विश्वकर्मा योजना विस्तार एवं पहली LNG-संचालित ट्रेन परियोजना**
* तथ्य : 17 सितंबर को विश्वकर्मा जयंती और प्रधानमंत्री के जन्मदिवस के अवसर पर साबरमती (गुजरात) में ₹1,542 करोड़ से अधिक की रेलवे पहलों और पहली LNG-संचालित (तरलीकृत प्राकृतिक गैस) ट्रेन परियोजना का शुभारंभ किया गया।
* प्रभाव : पारंपरिक कारीगरों व शिल्पकारों को संस्थागत ऋण व आधुनिक टूलकिट मिलने से 'पीएम विश्वकर्मा योजना' का दायरा बढ़ा तथा रेलवे में स्वच्छ ईंधन आधारित हरित परिवहन को प्रोत्साहन मिला।

5) **21 सितंबर 2026 | तिरुवनंतपुरम, केरल | श्री नारायण गुरु समाधि दिवस एवं सामाजिक समानता सम्मेलन**
* तथ्य : 21 सितंबर को प्रसिद्ध समाज सुधारक श्री नारायण गुरु की पुण्यतिथि (समाधि दिवस) पर केरल तथा दक्षिणी राज्यों में विशेष राजकीय कार्यक्रम आयोजित किए गए।
* प्रभाव : "एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर" के उनके संदेश को आधार बनाकर हाशिए पर मौजूद वर्गों के लिए नए कौशल विकास और सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों की घोषणा की गई।

6) **23 सितंबर 2026 | नई दिल्ली (UPSC) | सिविल सेवा परीक्षा सुधारों पर उच्च-स्तरीय कार्यबल रिपोर्ट**
* तथ्य : 23 सितंबर को संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) और केंद्रीय शिक्षा सुधार कार्यबल (Task Force) ने सार्वजनिक भर्ती व प्रतियोगी परीक्षाओं को लीक-मुक्त बनाने के लिए नई डिजिटल गाइडलाइंस जारी कीं।

* प्रभाव : परीक्षा केंद्रों पर 'कवच सुरक्षा प्रणाली', बायोमेट्रिक सत्यापन और ऑनलाइन कंप्यूटर आधारित मॉडल (CBT) के एकीकरण से भर्ती प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और अभ्यर्थियों का भरोसा बढ़ा।

7) **25 सितंबर 2026 | गुवाहाटी, असम | 'प्रोजेक्ट दृष्टि' (Project DRISHTI) का शुभारंभ**

* तथ्य : 25 सितंबर को पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (NFR) ने आईआईटी गुवाहाटी के सहयोग से एआई-आधारित 'प्रोजेक्ट दृष्टि' लॉन्च किया।
* प्रभाव : यह प्रणाली मालगाड़ी के डिब्बों, तालों और सीलों की रीयल-टाइम स्वचालित निगरानी करेगी, जिससे रेल माल ढुलाई में चोरी और सुरक्षा जोखिमों में भारी कमी आएगी।

8) **28 सितंबर 2026 | नई दिल्ली (सर्वोच्च न्यायालय) | UPI भुगतान पर MDR छूट व डिजिटल बैंकिंग सुरक्षा फैसला**

* तथ्य : 28 सितंबर को भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट (MDR) न लगाने के केंद्र सरकार के फैसले को बरकरार रखते हुए उस पर रोक लगाने वाली याचिका खारिज की।
* प्रभाव : आम नागरिकों और छोटे व्यापारियों के लिए शून्य-शुल्क डिजिटल लेनदेन की सुविधा सुरक्षित रही, जिससे देश में कैशलेस डिजिटल अर्थव्यवस्था को और मजबूती मिली।

9) **29 सितंबर 2026 | आइची-नागोया, जापान / नई दिल्ली | एशियाई खेल 2026 में भारतीय कबड्डी टीम का ऐतिहासिक स्वर्ण**

* तथ्य : 29 सितंबर को 2026 एशियाई खेलों में भारतीय पुरुष कबड्डी टीम ने फाइनल में ईरान को 40-34 से हराकर स्वर्ण पदक हासिल किया।
* प्रभाव : एशियाई खेलों में भारत के दबदबे को पुनस्थापित करते हुए देश में पारंपरिक खेलों के प्रशिक्षण बुनियादी ढांचे और राज्यस्तरीय सहायता में वृद्धि की घोषणा की गई।

10) **30 सितंबर 2026 | श्रीहरिकोटा, आंध्र प्रदेश | टेकमी2स्पेस (TakeMe2Space) का 'MOI-1A' एज-कंप्यूटिंग उपग्रह**

* तथ्य : 30 सितंबर को भारतीय अंतरिक्ष स्टार्ट-अप टेकमी2स्पेस ने देश का पहला एज-कंप्यूटिंग उपग्रह 'MOI-1A' पेश किया, जो स्पेसएक्स के आगामी मिशन से लॉन्च हेतु तैयार किया गया।
* प्रभाव : यह उपग्रह डेटा को कक्षा (Orbit) में ही प्रोसेस करेगा, जिससे पृथ्वी पर केवल रिफाइंड डेटा भेजा जाएगा। इससे भारतीय निजी अंतरिक्ष अनुसंधान और एआई-संचालित उपग्रह तकनीक में नई क्रांति आई।

🌐 10 सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय समसामयिकी (सितंबर 2026)

1) **01 सितंबर 2026 | वाशिंगटन / तेहरान | होरमुज जलडमरूमध्य संकट और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति**
* तथ्य : 01 सितंबर को होरमुज जलडमरूमध्य में व्यापारिक जहाजों की सुरक्षा को लेकर अमेरिका और मध्य-पूर्व क्षेत्र में तनाव के बीच संयुक्त राष्ट्र की मध्यस्थता में नई शांति वार्ता की पहल हुई।
* प्रभाव : वैश्विक समुद्री व्यापार मार्गों में जहाजों का आवागमन सुरक्षित करने के प्रयासों से कच्चे तेल की कीमतों और वैश्विक माल ढुलाई बीमा दरों में स्थिरता आई।

2) **08 सितंबर 2026 | पेरिस / न्यू यॉर्क (UNESCO) | अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस 2026**
* तथ्य : 08 सितंबर को यूनेस्को द्वारा "Literacy for People, the Planet and Prosperity" थीम के तहत विश्व साक्षरता दिवस का आयोजन किया गया।
* प्रभाव : विकासशील देशों में डिजिटल साक्षरता और बुनियादी गणितीय कौशल (FLN) को बढ़ावा देने के लिए $2 बिलियन के वैश्विक कोष की घोषणा की गई।

3) **15 सितंबर 2026 | न्यू यॉर्क (UNHQ) | संयुक्त राष्ट्र महासभा का 81वाँ सत्र (UNGA 81)**
* तथ्य : 15 सितंबर को न्यू यॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा का 81वाँ सत्र शुरू हुआ। इस वर्ष वैश्विक नेताओं का ध्यान आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के नियमन और जलवायु संकट पर केंद्रित रहा।

* प्रभाव : 'किलर रोबोट्स' और स्वायत्त हथियारों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने तथा एआई के जिम्मेदार उपयोग हेतु वैश्विक नियमों का ड्राफ्ट तैयार करने पर सहमति बनी।

4) **16 सितंबर 2026 | मॉन्ट्रियल, कनाडा | विश्व ओजोन दिवस और 'मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल' समीक्षा**

* तथ्य : 16 सितंबर को विश्व ओजोन दिवस के अवसर पर वैश्विक जलवायु परिवर्तन और ओजोन परत के पुनर्प्राप्ति डेटा की समीक्षा की गई।

* प्रभाव : हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (HFCs) के उपयोग में कटौती करने की किगाली संशोधन की प्रतिबद्धताओं को तेज करने का संकल्प दोहराया गया।

5) **21 सितंबर 2026 | जेनेवा (UN) | अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस (International Day of Peace)**

* तथ्य : 21 सितंबर को संयुक्त राष्ट्र द्वारा "Invest in Peace – For Everyone, Everywhere, Every Day" थीम के साथ अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस आयोजित हुआ।

* प्रभाव : युद्धग्रस्त क्षेत्रों में तत्काल संघर्ष-विराम और मानवीय सहायता पहुंचाए जाने के लिए सुरक्षा परिषद से कड़े बहुपक्षीय प्रस्ताव पास कराने पर जोर दिया गया।

6) **23 सितंबर 2026 | न्यू यॉर्क | UNGA 81 क्लाइमेट समिट और 'सुपर एल नीनो' चेतावनी**

* तथ्य : 23 सितंबर को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में विशेष जलवायु शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया।

* प्रभाव : वैज्ञानिकों ने पेरिस समझौते के 1.5°C लक्ष्य के पार जाने और आगामी 'सुपर एल नीनो' की चेतावनी दी, जिसके बाद हरित ऊर्जा परिवर्तन हेतु विकासशील राष्ट्रों को $100 बिलियन के वार्षिक फंड की वितरण प्रक्रिया शुरू की गई।

7) **26 सितंबर 2026 | वियना, ऑस्ट्रिया | परमाणु हथियारों के पूर्ण उन्मूलन हेतु अंतरराष्ट्रीय दिवस**

* तथ्य : 26 सितंबर को संयुक्त राष्ट्र और IAEA द्वारा परमाणु निरस्त्रीकरण दिवस मनाया गया।
* प्रभाव : वैश्विक परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने और 'सीटीबीटी' (CTBT) पर शेष हस्ताक्षरकर्ता देशों द्वारा अनुसमर्थन (Ratification) हेतु वैश्विक कूटनीतिक प्रयास तेज हुए।

8) **28 सितंबर 2026 | जेनेवा (WHO) | ईबोला एवं संक्रामक रोग नियंत्रण आपातकालीन बैठक**
* तथ्य : 28 सितंबर को विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने कांगो (DRC) में फैले ईबोला प्रकोप और यमन में हैजा संकट पर वैश्विक आपातकालीन समीक्षा जारी की।
* प्रभाव : प्रभावित क्षेत्रों में टीकों, ऑक्सीजन आपूर्ति और आपातकालीन चिकित्सा टीमों की त्वरित तैनाती के लिए डब्ल्यूएचओ ने 'इमरजेंसी रिस्पॉन्स फंड' जारी किया।

9) **28 सितंबर 2026 | न्यू यॉर्क | यूएनएससी में भारत और ब्राजील की स्थायी सदस्यता का समर्थन**
* तथ्य : 28 सितंबर को यूएनजीए 81 के दौरान संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधारों पर चर्चा के तहत कई वैश्विक शक्तियों ने भारत और ब्राजील की स्थायी सदस्यता (Permanent Seat) का समर्थन किया।
* प्रभाव : ग्लोबल साउथ के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने और 21वीं सदी की वास्तविकताओं के अनुरूप सुरक्षा परिषद के पुनर्गठन की मांग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारी बल मिला।

10) **29 सितंबर 2026 | जेनेवा / रोम (FAO) | अंतरराष्ट्रीय खाद्य हानि और अपशिष्ट जागरूकता दिवस**
* तथ्य : 29 सितंबर को एफएओ (FAO) और यूएनईपी (UNEP) द्वारा खाद्य बर्बादी रोकने हेतु वैश्विक जागरूकता दिवस मनाया गया।
* प्रभाव : आपूर्ति श्रृंखला में भोजन की बर्बादी घटाकर कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने और वैश्विक भुखमरी से निपटने के लिए नई एआई-संचालित कोल्ड चेन तकनीकों को साझा किया गया।

आगामी योजनाएँ

- 13 अक्टूबर – अर्द्धवार्षिक परीक्षा उत्तर पुस्तिका अवलोकन।
- 17 अक्टूबर – विजय दशमी कार्यक्रम।
- 06 नवम्बर – दीपोत्सव कार्यक्रम।

मीडिया की नजर में

Welcome Lakhimpur Digital Seva

Lakhimpur-Kheri |

हिंदी दिवस पर छात्राओं ने लिया हिंदी के सम्मान का संकल्प

संस्थापक प्रबंधक स्व. कन्हैयालाल की पुण्यतिथि पर पुष्पांजलि कार्यक्रम, विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

आज का भारत

'नमामि भारतम्': वन्दे मातरम् के 150वें वर्ष पर देशभर में गूंजा राष्ट्रस्वर

25 सितंबर को 25000 से अधिक स्थानों पर एक करोड़ से अधिक विद्यार्थी, अभिभावक एवं जनसमुदाय ने एक साथ गाया संपूर्ण वन्दे मातरम्

संवाददाता डॉ. अनिल सिंह तथा

दैनिक जनजागरण

सत्य और तथ्य के साथ

www.dainikjanjagran.in

सपनों के भारत की तस्वीर में खिली छात्राओं की प्रतिभा

प्रतिभा प्रदर्शन करती सरस्वती विद्या मंदिर की छात्राएं

लखीमपुर-खीरी। सपनों में जब देश का उज्ज्वल भविष्य आकार लेने लगे और कल्पनाओं को प्रतिभा की उड़ान मिल जाए, तो राष्ट्र निर्माण की तस्वीर और भी सुंदर हो उठती है। इसी भाव को साकार करते हुए शनिवार को सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इंटर कॉलेज, मिश्राना में पनों का भारत-सेवा चित्र" अभियान के अंतर्गत छात्राओं के मध्य ड्रॉइंग, भाषण सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

ला विद्यालय निरीक्षक के आदेशानुसार आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों की कल्पनाओं, आकांक्षाओं और विचारों को "विकसित भारत 2047" के सामूहिक जोड़ना रहा। छात्राओं ने अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से भारत की सुंदर तस्वीर प्रस्तुत की। ड्रॉइंग प्रतियोगिता के जूनियर वर्ग में स्तोगी प्रथम, निहारिका सिंह द्वितीय और अवि वर्मा तृतीय रहीं। सीनियर द्र गुप्ता प्रथम, भूमिका वर्मा द्वितीय और यशस्वी वर्मा तृतीय स्थान पर रहीं। में कुल 135 छात्राओं ने प्रतिभाग किया। भाषण प्रतियोगिता में पूर्णिमा

1187 छात्राओं ने एक स्वर में गाया वंदे मातरम्

लखीमपुर-खीरी। वंदे मातरम् के 150वें वर्ष के उपलक्ष्य में विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली के मार्गदर्शन में देशभर में 'नमामि भारतम' के तहत सामूहिक वंदे मातरम् गायन कार्यक्रम आयोजित किया गया। एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने इस सामूहिक गायन को प्रमाणीकरण के लिए सूचीबद्ध किया है। सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इंटर कॉलेज और सनातन धर्म सरस्वती शिशु मंदिर के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम हुआ। इसमें 1187 छात्राओं, अभिभावकों, प्रबंध समिति, आचार्य एवं आचार्याओं ने सामूहिक वंदे मातरम् का गायन किया। मुख्य अतिथि कमांडेंट प्रमोद देवरानी और कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. रूपक टंडन रहे।शिशु मंदिर प्रधानाचार्य हीरा सिंह ने अतिथियों का परिचय कराया, जबकि प्रधानाचार्य शिप्रा बाजपेयी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। छात्राओं ने पं. दीनदयाल उपाध्याय के व्यक्तित्व-कृतित्व तथा वंदे मातरम् के इतिहास और भावार्थ से परिचित कराया। डॉ. रूपक टंडन ने वंदे मातरम् की प्रासंगिकता बताई। कमांडेंट प्रमोद देवरानी ने कहा कि ऐसे आयोजनों से देशभक्ति की भावना का संचार होता है और नागरिकों को राष्ट्र के प्रति अपने दायित्वों का बोध होता है।

एक लक्ष्य,एक स्वर,एक भाव के साथ गूंजा वन्देमातरम

लखीमपुर

विद्याभारती विद्यालय सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इण्टर कॉलेज, मिश्राना, लखीमपुर.खीरी में सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इण्टर कॉलेज तथा सनातन धर्म सरस्वती शिशु मंदिर द्वारा संयुक्त रूप में प्रातः 10:15 बजे कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें 1787 छात्र/छात्राओं, अभिभावकों, प्रबंध समिति, समस्त विद्यालय परिवार ने सामूहिक वंदेमातरम गायन किया। कार्यक्रम में श्री प्रमोद देवरानी, कमांडेंट, सशत्र सीमा बल, तृतीय वाहिनी, लखीमपुर खीरी मुख्य अतिथि तथा डॉ0 रूपक टंडन, वरिष्ठ नेत्र सर्जन, कार्यक्रम अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रगान, दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ। शिशु मंदिर प्रधानाचार्या श्रीमती हीरा सिंह जी ने अतिथियों का परिचय करवाया। प्रधानाचार्या श्रीमती शिप्रा बाजपेयी जी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। सरस्वती शिशु मंदिर के आचार्य श्री मनोज दीक्षित जी ने वंदे मातरम गायन का महत्व विषय पर अपने विचार रखे ।छात्राओं ने अपनी ओजस्वी वाणी में पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा राष्ट्रगीत वंदेमातरम के इतिहास एवं भावार्थ से सभी को परिचित कराया।

डॉ0 रूपक टण्डन जी ने वंदेमातरम की प्रासंगिकता से सभी को अवगत कराया। कमाण्डेंट श्री प्रमोद देवरानी जी ने बताया कि ऐसे आयोजनों से सभी देशवासियों के अंदर देशभक्ति का संचार होता है और सभी को राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों का बोध होता है। इस प्रकार के कार्यक्रम समाज को नई दिशा देने का कार्य करते हैं। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रधानाचार्या श्रीमती शिप्रा बाजपेई जी ने किया।

प्रबन्धक श्री चन्द्र भूषण साहनी जी ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में श्री रवि भूषण साहनी-प्रबन्धक, सनातन धर्म सरस्वती शिशु मंदिर, विद्यालय प्रबन्ध समिति के कोषाध्यक्ष श्री तुषार गर्ग, सदस्य सी.ए. अमित गुप्ता, श्रीमती सीमा साहनी, श्रीमती ममता अग्रवाल, श्रीमती नूतन गुप्ता एवं अन्य गणमान्य नागरिक व अभिभावक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन प्रसाद वितरण के साथ किया गया।

Welcome Lakhimpur Digital Seva

Lakhimpur-Kheri | 14 September 2026 |

सर्वाइकल कैंसर के खिलाफ जागरूकता की अलख, 50 छात्राओं का हुआ टीकाकरण

रोटरी क्लब लखीमपुर सेंट्रल ने सनातन धर्म सरस्वती विद्या मंदिर बालिका इंटर कॉलेज में लगाया शिविर

लखीमपुर।

सत्य • सेवा • समर्पण

Welcome Lakhimpur Digital Seva

लखीमपुर-खीरी की हर खबर, आपके साथ

स्थानीय समाचार सिर्फ आपके लिए

लखीमपुर-खीरी, शनिवार, 19 सितंबर 2026

सपनों के भारत की तस्वीर छात्राओं ने रंगों और शब्दों में उकेरी

'सपनों का भारत-सेवा चित्र' अभियान में प्रतिभा का दिखा अनुपम संगम

लखीमपुर-खीरी।

प्रतियोगिता परिणाम

रोटरी क्लब ने 50 छात्राओं को लगाया सर्वाइकल कैंसर से बचाव का टीका